गूंज उठे पवारी
आधुनिक पवारी बोली साहित्य रचना
रचना की अहम विशेषताएं निम्न प्रकार से है -
१. रचनाकार ने रचना का श्री गणेशाय देवी-देवताओं के विधिवत नमन-स्मरण से किया है ।
२. वाग्देवी स्तुति सारगर्भित तथा अलौकिक रचना है ।
३. पवारी भाषा गौरव गरिमा बहोत ही अलंकृत शब्दों में प्रस्तुत की गई है ।
४. पवारी इतिहास की काव्यमय प्रस्तुति सटीक है ।
५. पवार समाज एवम् पवार जन का सुसंकृत स्फटिक परिचय दिया गया है।
६. रचनाओं में मा की ममता, त्याग एवम उसका परिहास, बेटी का हृदय स्पंदन, कृंदन, आक्रोश, शिक्षा, चरित्र निर्माण एवं स्वतंत्रता की आंतरिक चाह, बहन का भाई, भाभी आत्मिक प्रेम बंधन, बेटे की आधुनिक उड़ान, बुजुर्गों का उपहास आदि कविताएं मन को झंकृत कर देती है ।
७. सामाजिक परिवेश, सुरीतियां, कुरीतियां, रिस्ते नाते, सामाजिक एकता, विकास को प्रोत्साहन, निकर्मन्यता से कर्म की ओर अग्रसर का शंखनाद बहुत ही सरल किंतु प्रभावी शैली में किया गया है । रचनाकार की समाजोत्थान की कशीश पाठक के मन को झकझोर देती है।
८. ग्रामीण जीवन पर आधारित कुछ रचनाएं ग्रामीण संस्कृति, सन-त्योहार, जीवन-चर्या, समस्याएं, युवाओं में व्याप्त बेरोजगारी, गरीबी, साधनहिनता, सामाजिक परिवर्तन पर आक्रोश विषद करती नजर आती है।
९. मानव जीवन सार, मानविय मूल्यों का दर्शन कुछ रचनाएं कराती हैं।
१०. कहानियाँ हृदयस्पर्शी तथा संदेश प्रेषित कर रही है। पाठक उन्हे पढ़कर मार्मिक, संवेदनशिल बन जाता है। राजा भोज तथा राजा जगदेव की कहानियाँ लेखक के गहन अध्ययन को उजागर करती है। ऐतिहासिक तथ्यों के साथ इन महान विभूतियों का आदर्श जीवन चरित्र का भी सजीव चित्रण किया गया है।
ISBN : 978-93-5097-243-4
www.himpub.com
₹ 100/-
डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
गूंज उठे पवारी
हिमालया पब्लिशिंग हाऊस
गूंज उठे पवारी
आधुनिक पवारी बोली साहित्य रचना
डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
२५वा
झाडीबोली साहित्य सम्मेलन, २०१७
हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

गूंज उठे पवारी

आधुनिक पवारी बोली साहित्य रचना

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे M.Sc., Ph.D

से.नि. प्राध्यापक, विभाग प्रमुख, अधिष्ठाता

रा.तु.म. नागपुर विद्यापीठ, नागपुर (महाराष्ट्र)

झाडीबोली साहित्य सम्मेलन, २०१७

हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

First Edition : 2017

Published by : Mrs. Meena Pandey
for **HIMALAYA PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.,**
"Ramdoot", Dr. Bhalerao Marg, Girgaon, Mumbai - 400 004.
Phones: 23860170, 23863863, Fax: 022-23877178.
Email: himpub@vsnl.com ▫ Website: www.himpub.com

Branch Offices :

New Delhi : "Pooja Apartments", 4-B, Murari Lal Street, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110 002. Phones: 23270392, 23278631.

Nagpur : Kundanlal Chandak Industrial Estate, Ghat Road, Nagpur - 440 018. Phones: 2738731, 3296733

Bengaluru : Plot No. 91-33, 2nd Main Road Seshadripuram, Behind Nataraja Theatre, Bengaluru - 560 020. Phones: 08041138821, 9379847017, 9379847005.

Hyderabad : No.3-4-184, Lingampally, Besides Raghaven SwamyMatham, Kachiguda, Hyderabad - 500 027. Phones: 040-27560041, 27550139.

Chennai : New-20, Old-59, Thirumalai Pillai Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Mobile: 09380460419.

Pune : First Floor, "Laksha" Apartment, No. 527, Mehunpura, Shaniwarpeth, (Near Prabhat Theatre), Pune - 411 030. Phones: 020-24496323.

Lucknow : House No. 731, Shekhupura Colony, Near B.D. Convent School, Vikas Nagar, Aliganj, Lucknow - 226022. Mob: 09307501549.

Ahmedabad : 114, "SHAIL",1st Floor, Opp. Madhu Sudan House, C.G.Road, Navrang Pura, Ahmedabad - 380 009. Phone: 079-26560126.

Ernakulam : 39/176 (New No: 60/251) 1ST Floor,KarikkamuRoad, Ernakulam, Kochi - 682011, Kerala. Tel : (91) (0484) 2378012, 2378016.

Bhubaneswar : 5, Station Square, Bhubaneswar (Orissa) - 751 001. Phone: 0674-2532129,9338746007.

Kolkata : 108/4, Beliaghata Main Road, Near ID Hospital, Opp. SBI Bank, Kolkata - 700 010. Phone: 033-32449649.

Printed at : **Shri Gajanan Enterprises**
21, Surendra Nagar Nagpur -440 015 on behalf of HPH

मोरा दुय बोल...

पवारी पवार समाज की मातृभाषा आय। कई पीढीलक घर-बाहेर बोलचाल की या आमरी भाषा होती पर समाज मा जस-जसो मराठी हिंदी को जनभाषा मुहुन प्रचार बढयो, तस-तसो पवारी भाषा को बोल-चाल कम होत गयेव। आजकल या अनपढ़ पवार लोकहिन की बोली बनकर रय गई।

पवार बोली आपलं भारत सरकार क सर्वेक्षण अनुसार हिंदी की उपभाषा मुहुन भारतीय भाषा सूची मा देई गई से। भाषा बोलनेवालो जनसंख्या को आधार पर हिंदी ला सहावो ना पवारी ला ४२ वो क्रमांक पर स्थान देई गयी से। सरकारी सर्वेक्षण अनुसार ३८-४० लाख पवार जनसंख्या मा सिरफ चार लाख पच्चीस हजार सात सौ पंचेचारीस पोवारलोक फिलहाल बोलचाल मा पवारी बोली को उपयोग करसेत (१०%) असो समजमा आयेव।

पवारी बोली पर पहिली नजर इंग्रजी को भाषातज्ञ सर जॉर्ज अब्राहम गिर्यसन की पड़ी । दुसरो इंग्रज विद्वान आर वी रसेल न आपली किताब 'कास्ट्स अँड ट्राईब्स ऑफ सी.पी.एन्ड बेरार' मा पवारी को थोडो अभ्यास करीस ना काही बिह्या का गाना भी अर्थ सहित वर्णन करीस। पवारी का बिह्या, जातोदरन, फुगडी, पऱ्हा का गाना आमी लहानपण मा आयकत होता पर वय आता कभी-कभी पवार समाज की पत्रिका मा देखन भेटसेत। पवारी बोली को पहिलो शास्त्रोत्क अभ्यास नागपुर विद्यापीठ मा डॉ.सु.बा.कुलकर्णी न करीस ना पीएच.डी. को प्रबंध पर ओला डिग्री भेटी। वोनं व्यंजन, स्वर, शब्द, वाक्य को मराठीसिन तुलनात्मक अभ्यास १९७२ मा करीस। डॉ.मंजू अवस्थी न १९९९ मा बालाघाट जिला को बोलिओं को अभ्यास कर रायपुर विद्यापीठलक डी.लिट पदवी लेईस। वोनं पवारी बोली को शब्द भंडार ना गाना मा छंद, अलंकार को अभ्यास करीस.

मीनं २०११ मा पवारी बोली पर वैज्ञानिक अभ्यास करन को बेड़ा उठायो। सविस्तर भाषा विज्ञानक धरती पर व्याकरण, वर्ण, शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, समास, वाक्य

रचना, क्षेत्रीय भाषा प्रभाव विषद करन को प्रयत्न करेव। पवारी लोक साहित्य, शब्दकोश ढुंड ढुंग कर जमा करेव ना 'पवारी ज्ञानदीप' मा १५६ पृष्ठ पवारी बोली ला समर्पित करेव।

एकं बाद डॉ.शारदा पवार (कौशिक) प्राध्यापक, भैसदेही (बैतुल) न पवारी (भोयरी) लोकसाहित्य (गीत) को भाषा वैज्ञानिक अभ्यास करीस ना वोला २०१४ मा पीएच.डी. पुरस्कृत भई।

पवारी ला जनसम्मुख आनन को काम, आधुनिक गीत लिखन को काम स्व.श्री गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, श्री वल्लभ डोंगरे भोपाल, श्री जयपालसिंह पटले, नागपुर, स्व.श्री मनराज पटले, साकोली ना समाज की पत्रिकाहिन न करीन। जयपालसिंग पटले न पवार गाथा ना ५-६ किताबं २००६-२०१५ मा लिखीस। पवारी मा पद्य लोकगीत ना आधुनिक गीतलक भरीसे पर गद्य की खुप कमी से। बिर्लाद दुय-चार लेख भेटं सेत।

पवारी बोली ला समृद्धशाली ना समाज मा लोकप्रिय बनावन क दृष्टिलक 'गूंज उठे पवारी' की रचना तयार भई से। एकंमा साठक कविता/गीत ना काही कथा/कहानी को समावेस से। पवारी संस्कृति ना समाजोत्थान लक्ष्य केंद्रितकर रचना करी गई से। पुरो साहित्य मोरो ओरिजनल आय। या समाज ला मोरी भेटं आय ।

डॉ.सु.बा.कुलकर्णी को पूर्व प्रकाशित लेख पवारी बोली को परिचय कराये। मोला श्री लखनसिंह कटरे न खुप प्रोत्साहन ना साहित्यकार मुहुन मोरो किताब सामुग्री की सुधारना ना प्रस्तावणा प्रदान करीन। मी उनको मनःपुर्वक आभारी सेव। झाडीपट्टी साहित्य मंडल को भी खुब आभारी सेव उनको प्रेम लका कि उननं २५ वो झाडीबोली साहित्य सम्मेलन, जवाहरनगर (भंडारा) मा यनं पुस्तक को विमोचन की संधी देईन।

मी श्री गजानन इंटरप्रायजेस नागपुर खासकर श्री संदिप वैद्य ना श्री चंद्रकांत अटाळकर को कम्पुटर शब्दांकन साथी उनला धन्यवाद देसू। अंत मा हिमालया पब्लिशिंग हाऊस यनं अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन नं किताब प्रकासित करीन। मी उनको मनःपुर्वक आभारी सेव। सबला मोरो नमस्कार!

डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे
(रचनाकार)

४४, जिज्ञासा, विजयनगर
दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपूर ४४० ०२२
मो - ९०९६०८८४३६

रचना मानस

'गूंज उठे पवारी' यह आधुनिक पवारी बोली साहित्य संकलन प्रकाशित करते हुये हिमालय पब्लिशिंग हाऊस गर्वान्वित महसूस कर रहा है। लेखक महोदय ने १०० से जादा कविता एवं कहानियाँ प्रकाशन हेतु मूल्यांकन के लिये हस्तांतरित की थी । हमारे प्रकाशन मंडल ने उनमें से केवल ६०-६२ कविताएं तथा ५ कहानियॉ स्वीकृत की । भाषाविद मंडल ने यथोचित संशोधन कर साहित्य प्रकाशन की अनुमति प्रदान की । उनके रचना गुणवत्ता निकषों के आधार पर किताब के महत्वपूर्ण मानबिंदु निम्नप्रकार के है -

१. यह एक हिंदी भाषा की उपभाषा पवारी की मौलिक साहित्य रचना है ।

२. रचयिता ने कथित भाषा को लिखित भाषा बनाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है ।

३. रचयिता ने पवारी भाषा जो उसकी मातृभाषा है तथा मालवा से स्नानांतरण के साथ स्थानीय खासकर झाड़ी बोली से घुलमिल गयी है की प्रगल्भ साहित्य प्रतिभा एवम् शब्द भंडार को सहजता से उजागर किया है ।

४. रचयिता ने जनजीवन के अनेक विषयों पर रचनायें लिखी है तथा पवार जनमानस की अभिव्यक्ति का सौंदर्य परिलक्षित किया है ।

५. रचनाएं धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आधुनिक युग का विंहगम दृष्य प्रदर्शित करती है । साथोसाथ भाषा वैभव, भाषा विज्ञान तथा उसके संवर्धन को भी लक्ष्य बनाया गया है ।

६. रचना की अहम विशेषताएं निम्न प्रकार से है -

१. रचनाकार ने रचना का श्री गणेशाय देवी-देवताओं के विधिवत नमन-स्मरण से किया है ।

२. वाग्देवी स्तुति सारगर्भित तथा अलौकिक रचना है ।

३. पवारी भाषा गौरव गरिमा बहोत ही अलंकृत शब्दों में प्रस्तुत की गई है ।

४. पवारी इतिहास की काव्यमय प्रस्तुति सटीक है ।

५. पवार समाज एवम् पवार जन का सुसंकृत स्फटिक परिचय दिया गया है ।

६. रचनाओं में मा की ममता, त्याग एवम उसका परिहास, बेटी का हृदय स्पंदन, कृंदन, आक्रोश, शिक्षा, चरित्र निर्माण एवं स्वतंत्रता की आंतरिक चाह, बहन का भाई, भाभी आत्मिक प्रेम बंधन, बेटे की आधुनिक उड़ान, बुजुर्गों का उपहास आदि कविताएं मन को झंकृत कर देती है ।

७. सामाजिक परिवेश, सुरीतियां, कुरीतियां, रिस्ते नाते, सामाजिक एकता, विकास को प्रोत्साहन, निकर्मन्यता से कर्म की ओर अग्रसर का शंखनाद बहुत ही सरल किंतु प्रभावी शैली में किया गया है । रचनाकार की समाजोत्थान की कशीश पाठक के मन को झकझोर देती है।

८. ग्रामीण जीवन पर आधारित कुछ रचनाएं ग्रामीण संस्कृति, सन-त्योहार, जीवन-चर्या, समस्याएं, युवाओं में व्याप्त बेरोजगारी, गरीबी, साधनहिनता, सामाजिक परिवर्तन पर आक्रोश विषद करती नजर आती है।

९. मानव जीवन सार, मानविय मूल्यों का दर्शन कुछ रचनाएं कराती हैं।

१०. कहानियाँ हृदयस्पर्शी तथा संदेश प्रेषित कर रही है। पाठक उन्हे पढ़कर मार्मिक, संवेदनशिल बन जाता है। राजा भोज तथा राजा जगदेव की कहानियाँ लेखक के गहन अध्ययन को उजागर करती है। ऐतिहासिक तथ्यों के साथ इन महान विभूतीयों का आदर्श जीवन चरित्र का भी सजीव चित्रण किया गया है।

'गूंज उठे पंवारी' की आवाज समाज में निःसंदेह गूंजती रहेगी तथा यह रचना अजरामर, अलौकिक मौलिक रचना बन समाजजनों की अभिव्यक्ति होगी। ऐसा मेरा विश्वास है।

रचनाकार का हार्दिक अभिनंदन। पाठकवृंद को स्नेहिल अभिवादन।

भवदीय

गोकुल पांडेय

निदेशक

हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

प्रस्तावना

गूंज उठे पवारी : एक महत्वाचा प्रकल्प

झाडीपट्टीचे विदर्भातील मुख्य जिल्हे म्हणजे भंडारा, गोंदिया, चंद्रपुर, गढचिरोली, नागपुर, वर्धा, ई. तसेच जुन्या सी.पी.आणि बेरार मधील व आताच्या मध्यप्रदेशातील बालाघाट सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतुल ह्या जिल्ह्यातही काही ग्रामीण भागात आजही झाडीबोली बोलली जाते. ह्या झाडी बोलीच्या पट्ट्यात झाडीबोली खालोखाल बोलली जाणारी बोली म्हणजे पोवारी बोली आहे, असे म्हटल्यास चुकीचे ठरणार नाही. या दोन्ही बोलींचा एकमेकावरील प्रभाव लक्षात घेता यांना मावसबहिणीच म्हणणे संयुक्तीक ठरेल.

झाडीबोलीच्या काहीशा पडत्या काळात झाडीबोलीची चळवळ सुरु झाली व डॉ.हरिश्चंद्र बोरकर यांनी आपल्या सहकाऱ्यांसोबत झाडीबोलीला आज महत्वाचे स्थान मिळवून दिले आहे. तसे ठोस प्रयत्न पोवारी बोलीबाबत सातत्याने झाल्याचे दिसून येत नाही.

पोवार समाज म्हणजे कोहळी समाजासारखाच शेतीकामात अग्रेसर राहिलेला समाज आहे, परंतु पोवार समाजाने शेतीव्यवसायाच्या बदलत्या आर्थिक क्षमता आणि क्रमाकडे गांभीर्याने लक्ष न दिल्याने पोवार समाज आर्थिकदृष्ट्या मागासलेलाच राहिला. पोवार समाजाची मुख्य धाव शिक्षक होण्यापर्यंतच खूप काळ मर्यादित राहिल्याने त्यांना बदलत्या काळाचा अदमास जरा उशीराच आला. तशातच शिक्षकी पेशामुळे पोवारी बोली ही 'हेंगली बोली' आहे असा न्यूनगंड सुद्धा निर्माण झाला. पर्यायाने पोवारी बोलीसारखी एक समृद्ध बोली संपते की काय, अशी परिस्थिती उद्‌भवू लागली होती. परंतु शिक्षणामुळे बोलीच्या ऐतिहासिक,पारंपारीक व भाषिक महत्वाचे ज्ञान होऊ लागल्यावर पोवार समाजाच्या संघटनांनी हा आभारी न्यूनगंड घालविण्याचे महत्वाचे कार्य केले व पोवारी बोलीतही हळूहळू साहित्य निर्मिती होऊ लागली. परंतु हे प्रमाण खूपच कमी असून प्रहसन प्रचूरच राहिले आहे, ही कटू वस्तुस्थिती आहे.

एकेकाळी झाडीपट्टीतील बहुतेक गावांमध्ये पोवार पाटील असल्याने त्यांची बोली (पोवारी) शिकण्यात अन्य समाज बहुमानाचे समजत असे व पोवारी बोलीत बोलण्याच्या प्रयत्नात पोवारी बोली शिकून घेत असे. त्यामुळे झाडीबोली व पोवारी बोलीचा एक दुसऱ्यावर स्वाभाविक असा संपृक्त परिणाम झाल्याचे एखाद्या अभ्यासकाला जाणवेल अवश्य जाणवेल, म्हणूनच या दोन्ही बोलींना मी मावसबहिणी म्हणण्याचे धाडस करीत आहे.

तर अशा या झाडीबोलीच्या मावसबहिणीच्या म्हणजे पोवारी

बोलीच्या या 'गूंज उठे पवारी' संग्रहाला झाडीबोली साहित्य सम्मेलनाच्या रौप्य जयंती महोत्सवात प्रकाशित करण्याचे औचित्य आपोआपच सिद्ध होते. या संग्रहात पोवारी बोलीतील कविता, कथा आणि लेख ही आहेत. या संग्रहातील लिखाण/मजुकरावर मी कोणतेही भाष्य वा टिपणी न करता वाचकांना त्यावर स्वतंत्रपणे आपले मत बनविण्याची मोकळीक देऊ (?) इच्छितो. तथापि पोवारी बोलीतूनही या सत्योत्तर (Post Truth) युगातही आधुनिक व प्रचलित साहित्य विचार मांडता येणे शक्य असल्याचे महत्वाचे कार्य हा संग्रह पार पाडतो आहे, हे ह्या संग्रहाचे एक वैशिष्ट्यच म्हणावे लागेल, हे मी आवर्जून सांगू इच्छितो.

या संग्रहाची सुरवातच सध्याच्या प्रचलित प्रथेला टाळून प्राचीन साहित्याच्या प्रारम्भाला अनुरूप अशी करण्यात रचनाकाराने परंपरा आणि नाविण्य/आधुनिकता यांचा सुंदर संयोग साधला आहे, असे मला वाटते. या संग्रहाचे रचयिता डॉ.ज्ञानेश्वर बापुजी टेंभरे हे तिरोडा तालुक्यातील मेंढा (डाकराम सुकळी) या गावचे मुळ रहिवासी आहेत. त्यांनी प्राणीशास्त्र विषयात कीटकशास्त्र शाखेत विशेषज्ञता प्राप्त करुन Endocrinology मध्ये पीएच.डी. केली. त्याच विषयाच्या नागपूर विद्यापीठाच्या स्नातकोत्तर शैक्षणिक विभागात १९७३ ते २००४ पर्यंत व्याख्याता-प्रपाठक-प्राध्यापक व शेवटी विभागप्रमुख व विज्ञान अधिष्ठाता (डीन) पदावरून सेवानिवृत्त झाले आहेत. उत्तम शिक्षक व शास्त्रज्ञ असा त्यांचा लौकिक आहे. त्यांनी २१ पीएच.डी. संशोधकांना मार्गदर्शन, ८० शोधपत्र, ५ विषय-ग्रंथ व अंतरराष्ट्रीय स्तराचे प्रकाशने केली व ती १९८४ पासून तो आजपर्यंत चलनात आहेत. त्यांचा समाज संगठनाचा ४० वर्षांपासून कार्य, राजाभोज चरित्र, पवार इतिहास व 'ज्ञानदीप' ग्रंथातील पवारी भाषा विज्ञान, शब्दसंग्रह, लोकसाहित्य पोवार समाजात जगजाहीर आहे. अशा एका झाडीपट्टीच्या सुपुत्राने पोवारी बोलीला आधुनिक विचार क्षेत्रात साहित्यक्षेत्रात स्थान मिळवून देण्यासाठी एक प्रकल्पच हाती घेतला आहे. सदरील संग्रह म्हणजे त्याचीच एक कडी म्हणता येईल. ज्याप्रमाणे झाडीबोलीचे आजचे स्वरूप भाषाविंदासमोर दिमाखाने उभे ठाकले आहे तसेच झोडीबोलीच्या मावसबहिणीचे पोवारी बोलीचेही स्वरूप आधुनिक परिप्रेक्षात उभारण्याची डॉ.ज्ञानेश्वर टेंभरे यांची मनिषा पूर्ण व्हावी, यासाठी झाडीबोलीचा एक पाईक व पोवारी बोलीचा बालक म्हणून मी शुभेच्छा देतो व डॉ.ज्ञानेश्वर टेम्भरेच्या प्रकल्पाला सर्वकष यश लाभो अशी भाषाशास्त्र चरणी प्रार्थना करतो.

लखनसिंह कटरे
ज्येष्ठ मराठी साहित्यिक

पूर्व जिल्हा उपनिबंधक,
बोरकन्हार-४४१९०२,
जि. गोंदिया (म.रा.)

विदर्भाचे भाषा वैभव : पोवारी बोली

-

आज ज्या भूप्रदेशाला आपण विदर्भ म्हणून ओळखता त्या भूप्रदेशात एके काळी निबीड दंडकारण्य पसरलेले होते. या दंडकारण्यात नर्मदा नदी आणि विंध्य पर्वत ओलांडून आर्यांनी प्रवेश केला. या घटनेला तीन हजारांहून अधिक वर्षे सहज लोटली असतील. आर्य येण्यापूर्वी येथे ऑस्ट्रिक आणि द्रविड वंशाचे लोक राहत असत. विदर्भातील ऑस्ट्रिकांचे आज हयात असलेले वंशज कोरकू आणि निहाल हे आदिवास होत. या ऑस्ट्रिकांच्या भाषेत नदीला गंगा असा शब्द होता. या सामान्य नामाचे पुढे विशेषनाम झाले. ऑस्ट्रिकांवर द्रविडांनी आक्रमण केले. विदर्भातील द्रविडांचे विद्यमान वंशज गोंड, माडिया, कोलाम, परधान हे होत. गोंडांनी या प्रदेशावर शतकानुशतके राज्य केले. त्यांची सत्ता भोसल्यांनी हिसकावून घेतली. विदर्भातील पैनगंगा आणि वैनगंगा ही नद्यांची नावे गोंडी आहेत. गोंडी भाषेत पेन म्हणजे देव व वेन म्हणजे लोक. या प्रकारे पैनगंगा व वैनगंगा या खरोखरी देवगंगा व लोकगंगा आहेत.

वैनगंगेचे कृषि पंडित

प्राचीन काळापासून विदर्भातील वैनगंगा आणि पैनगंगा या नद्यांमधील भूप्रदेश अतिशय सुपीक म्हणून गणला जातो. त्याला 'धानाचे कोठार' म्हणूनच ओळखतात. या धानाच्या कोठारावरील अधिसत्ता जरी गोंडाची होती तरी शेतीचे कौशल्य मात्र त्यांच्यापाशी नव्हते. इतिहासकाळात, हा प्रदेश लागवडीखाली आणण्यासाठी नावा समाजाचे लोक मजूर, कारागीर, व्यापारी म्हणून येथे आले. त्यातील मालवा उज्जयिनी धार मधून नशिबाच्या शोधार्थ स्थलांतरील झालेला लोकसमूह म्हणजे पोवार समाज. पोवार हे वैनगंगेचे कृषि पंडित आहेत. वैनगंगेच्या खोऱ्यातील सारी सुबत्ता, सुपीकता आणि संपन्नता या पोवारांच्या अविरत श्रमांवर उभी आहे. इथल्या मातीलाही त्यांच्या घामाचा वास येतो.

वैदर्भीयांची सहिष्णुता

तसे पाहिले तर, सहिष्णुता आणि सहकार हा विदर्भाच्या लोकजीवनाचा स्थायीभाव आहे. येथे आलेल्या कोणासही त्यांनी अव्हेरले नाही. गेल्या सहस्त्र वर्षात नाना लोक समूहांचे येथे आगमन झाले. आंध्र-कर्नाटकातून आंध्र, कैकाडी, वडारी, होल्ये, कोमटी गोलार,नायडू आले. राजस्थान-गुजराथमधून

मारवाडी, माहेश्वरी, मेवाटी, बंजारी, भिल्ल, लेवा आले. छत्तिसगढ-छिंदवाड्याकडून हलबा, भतरे, कोसरे, भुंजिये,नहार-कमार, कतिये आले. माळवा-बुंदेलखंडातून कोष्टी, मरार लोधी, रघवी, काहली, पटवी व पवार आले. या सर्व जाती-जमातींनी आपल्याबरोबर आपल्या भाषा आणल्या, चालीरीती आणल्या, देवदेवता आणि श्रद्धा-उपासना आणल्या. कारागिरी आणि कलाकुसली आणल्या.

पोवारांची वसती प्राधान्येकरून भंडारा व गोंदिया जिल्ह्यात केंद्रित झालेली असून ती अंदाजे दोन लाख इतकी आहे. मध्यप्रदेशातील बालाघाट व सिवनी या जिल्ह्यातही यांची काही वसती आहे. बालाघाटकडील पोवारी बोलीवर पूर्ण हिंदीचा प्रभाव आहे, तर भंडारा - गोंदियाकडील पोवारींवर नागपुरी व चंद्रपुरी झाडी मराठीचा.

बोलींची विविधता

पोवारी ही एक जातिबोली आहे. जात हे रक्ताच्या नात्याने व अंतर्विवाह नियमाने बांधलेले व्यातमुख सामाजिक संघटन असते. यामुळे जातिबोली या अधिक आदानशील असतात व त्वरेने परिवर्तित होत जातात. जातीच्या तुलनेने जमात हा अधिक सुसंहत व दृढ सामाजिक गट असतो. यामुळे जमातबोली या कमी परिवर्तनशिल व आर्ष असतात. जातिबोली आणि जमातबोली यामधील परस्पर भाषिक व्यवहारामधून प्रादेशिकतेच्या आधारावर क्षेत्रबोली निर्माण होतात. नागपुरी, चंद्रपुरी (झाडी) वऱ्हाडी, खानदेशी, पुणेरी क्षेत्रबोली होत. क्षेत्रबोलीतील एखादी बोली शिष्यमान्य होऊन लेखन व्यवहाराचे माध्यम बनते व प्रमाणबोलीच्या पदवीस पोहोचते. ऐतिहासिकता व प्रामाण्य या आधारावर ती भाषा म्हणून ओळखली जाते. भाषेचे व्यवसाय, कार्यक्षेत्र, वय, लिंग इ. आधारांवरही प्रभेद संभवतात.

भांदक येथील शिलालेख

पोवारांचा विदर्भ संपर्क ही एक दीर्घकाली स्थलांतराची प्रक्रिया आहे. अकराव्या शतकात नागपूरकडील प्रदेश धारच्या परमारवंशीय राजांच्या मांडलिकीखाली होता. याची साक्ष भांदक येथील शके १०६८ च्या नागनाथ मंदिरातील मराठी शिलालेखात आढळून येते. या शिलालेखात धर्मशील राजा पवार याने मंदिराचा जीर्णोद्धार व नव्या मूर्तीची प्रतिष्ठापना केली असे म्हटले आहे. भोसल्यांच्या कारकीर्दीत तर अनेक पोवारांनी कटकपर्यंत स्वाऱ्या करून समशेर गाजविली आणि आपण शूर रजपुतांचे वंशज आहोत हे सिद्ध केले.

समशेरीप्रमाणेच नांगर धरण्यातही पोवारांचा हात कोणी धरणार नाही. त्यांनी आणि कोहळयांनी गावोगाव तलाव बांधून वैनगंगेचे खोरे सुजलाम आणि सुफलाम करून टाकले आहे.

घाट माळवी-थाट नागपुरी पोवारांच्या या दीर्घकालीन विदर्भ वास्तव्यामुळे त्यांच्या भाषेचा मूळ तोंडवळाच बदलून गेला आहे. तिचा घाट जरी माळवी असला तरी थाट मात्र नागपुरी आहे. चंद्रपूरकडील झाडी बोलीशी तिचे अतोनात साम्य आहे. पोवारी बोलीतील पुढील संवाद पहा.

तोरो नाव का से?	:	मोरो नाव बिसराम से.
तोरि उम्मर केति से?	:	मोरि उम्मर चारिस से.
तू कहां रहोसेस?	:	मि गोन्यामा रहु सु.
तु का करसेस?	:	मि खेतमा काम करू सु.
उ कोनको घर आईसे?	:	उ मोरो घर आईसे.

पोवारी बोलीची स्वर व्यवस्था अधिकांश हिंदी भाषेप्रमाणेच आहे. या बोलीत 'ळ' हा ध्वनी नाही. मराठी ऋणशब्दातील ळकारचा रकार करण्याची प्रवृत्ती दिसून येते. यामुळे होळीची होरि होते व शेळी ची सेरी होते. झोळी, माळी, सुतळी, साखळी, रामफळ हे शब्द झोरि, मारि, सुतरि, साकरि, रामफर असे होतात. कधीकधी ळ चा ड देखिल होतो. उदा. उथळ चे उथड व धर्मशाळा चे धरमसाडा असे रूप होते. शब्दारंभीच्या व चा ब होतो. जसे - वेळू : बेरू, वाळू : बारू. विहिर-बिहिर.

पोवारांच्या बोलीत 'श' हा ध्वनी नाही. शकाराचा सकार करण्याची प्रवृत्ती दिसून येते. यामुळे शिंगाचे सिंग व शेंगेचे सेंग होते. दन्त्य आणि तालव्य स्पर्शसंघर्षी ध्वनींमध्येही व्यवच्छेद आढळत नाही. प्रायः मुक्त-परिवर्तनच आढळते. यामुळे मराठीतील चांदी, चाळण, चवळी, चरखा, जांभई, जावई, जुना, झोपं, झाकणी यासारखे शब्द पोवारीत चांदि, चारनि, चवरि, चरखा, जांबइ, जवाई, जुना, झोप, झाकनि याप्रमाणे उच्चारले जातात. या बोलीत 'ण' हा ध्वनी नसल्याने बाणाचा बान बनतो व वेणीची बेनी बनते. शब्दारंभीच्या ए आणि ओ या स्वरांना य आणि व असे आगम होतात. यामुळे एकाचा येक व ओठाचा वठ होतो.

पोवारीत हिंदीप्रमाणे पुल्लिंग आणि स्त्रीलिंग अशी लिंगे आहेत. या बोलीत आंगन, कनिस, घुबड, चमडा, जंगल, जांबुर इ. मराठीत नपुंसकलिंगी असणारे शब्द पुल्लिंगी आहेत. तर नाक, पदक परसाद, सरन, मालिस यासारखे शब्द स्त्रीलिंगी आहेत. सामान्यतः पुल्लिंगी नामे अकारान्त व स्त्रीलिंगी नामे इकारान्त

असतात. विशेष म्हणजे, या बोलीत नामांना वचनविकार होत नाही. यामुळे येक घर, दुय घर, येक टुरा, दुय टुरा असेच अविचल रूप राहते. नामांचे सामान्य रूपही होत नाही. षष्ठीचा प्रत्यय 'को' तर सप्तमींचा प्रत्यय 'मा' असा आहे. जसे, उनको नवकर, ओको बाई, हातमा बगिचामा.

पोवारी बोलीत 'उ' हे तृतीय पुरुषवाचक पुल्लिंगी सर्वनाम आहे. स्त्रीलिंगी सर्वनाम 'वा' असे आहे. उदा. उ इस्कुल्या गयो. वा आपलो मायकर गयिसे. उ कोनको घर आय? वा मोरि पुस्तक आय.

पुल्लिंगी विशेषणे ओंकारान्त असतात, तर स्त्रीलिंगी इकारान्त असतात. जसे कारो, पिवरो, थोडो, चांगलोः कारि, पिवरि, थोडि, चांगलि.

क्रियापदाची भूतकाळी रूपे कहिस, करिस, बुलायिस, बेचिस, पाडिस अशी होतात. वतर्मानकाळी रूपे भुक से मार से, पड से आवडसे अशाप्रमाणे होतात. भविष्यकाळी रूपे पुरुष व वचन या आधारांवर फिरतात. जसे : उ टाके, आमि टाकबिन, वा टाकसे. व टाकसेति.

पोवारी गद्यांचा नमुना

''टुरा टुरिको जोडा अच्छो से. आमि टुरि देबिन तुमरो टुरासाटि. आमि देबिन, तुमि मांगबिन कहो, ना मांगो त दुय सव रुपया देनो पडे. आमि दुय सव रुपया नयि देजन. आमि बिना देज को बिहा करबिन.

मंग देनोच पडे, दुय तिन तोरा सोनो आननो पडे. सोनोमा येक चिताइत बनावनो पडे तिन तोराको. तोराभरकि नथ. दुय तोराकि साकरि तर्प. दुय तोराकि लाहान येवसेति. तिन तोराकि डगर होयसेति. काटाका पिंजन आनि पायमा नेवरि. करदुडा, तोराभरकि बारि. तोडो. नवरदेवको साज. येक कमिज, येक सालु, येकदुपटा, येक साल. नवरदेवको साज भयो.

लगिन अर्था वसेति. मंग बिजोरो भयो अहेर. लगिन लगावन नवरदेव जाहे. मंग नवरदेव लगिन लगाय कर आये. ढेंडोलगे नवरदेव आवसे. मंग घर नवरदेव आयो. मंग नवरदेवको यहां ढेंडो लग्यो, नवरानवरीला टिका देसेति. वोवारि टाको. जेवनकि पंगत पानसुपारी भयि, मंग नवरदेवको यहां लका नवरी वापिस. सर गयो बिहया.''

डॉ. सु. बा. कुळकर्णी,
पूर्व विभागप्रमुख 'मराठी'
रा.तु.म.नागपूर विद्यापीठ, नागपूर
(पवारी बोली अभ्यासक)

१०५, सुरसंगम सहनिवास,
२अ, बजाजनगर, नागपूर-१०

अनुक्रम

- मोरा दुय बोल ३
- रचना मानस ५
- प्रस्तावना ७
- विदर्भाचे भाषा वैभव : पोवारी बोली ९
- कविता संग्रह

१. शब्द सुमन चरणोंमा अर्पण १५
२. वाग्देवी स्तुति १६
३. पवारी माय माऊली १७
४. पवारी बोली १८
५. पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो १९
६. गौरवशाली पवार इतिहास २०
७. मी पवार मोरो परिचय सुनलो २१
८. पवार कभी झुकऽ नही २२
९. माय मोरी २३
१०. माय की महिमा २५
११. माय भई सबला ओझो २६
१२. मायघर २७
१३. जहां वहां अव्वल पवार नारी २८
१४. एक बेटी की व्यथा २९
१५. नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला ३०
१६. दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार ३१
१७. होहो मी तुमरी तुमरीच बेटी आव ३२
१८. संसार मा कोन से मोठो? = बेटी ३३
१९. बेटा मोरो जी नम्बर वन ३४
२०. कमाल को बेटा ३५
२१. भाऊ भौजाई मोरा दुय सुंदर डोरा ३६
२२. जबं सासू बोहू की खटक जासे ३७
२३. सासुला जवाई की मोठी फिकर ३८
२४. रिस्ता ३९
२५. पोरा ४०
२६. मंडई ४१
२७. पाणिग्रहण ४२
२८. कारतिक पुरनिमा माहत्म्य ४३
२९. घर की रौनक कहां चली गई ४४
३०. रंगत कसी बदल गई! ४५
३१. बाप गयो सरग मा, मी फसेव नरक मा ४६
३२. काहे करेत बिह्या धनी क्षत्रिय पवार ४७
३३. आन बान शान ४८
३४. कोनतो समाज धरम निभायात ४९
३५. बटवारा ५०
३६. किरसान ला मारो लुटो जमकर ५१
३७. हो हो मी सेव उच्च- सर्वोच्च पदविधर ५२
३८. नौकरी ५३
३९. सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ५४
४०. तरक्की भी होसे एक कहानी ५५
४१. पुरूषार्थ ५६
४२. काहे करसेव निरर्थक वादविवाद ५७
४३. गुरुजी मोला सांगत रव्ह, मानुस को जीवन कहाय ५८
४४. जीवन नोहे कंचा गोटी को खेल ५९
४५. सांगोजी कोन चलावसे यव चक्कर ६०
४६. आपलं हाथ लं आपली तकदीर बनाओ ६१
४७. आपलाच साथी ६२
४८. मानुस मुकदर्शी रव्हसे ६३
४९. जीवन मा बहाओ अमृत धारा ६४
५०. मानुस न सोडीस मानुसकी त वोला का कहे ६५
५१. नहानपण ६६
५२. भौतिक सुख की धाव ६७
५३. आरक्षण ६८
५४. करो बेधडक जमकर भ्रष्टाचार ६९
५५. हां हां नही कमायेव मी मोठो धन जवारात ७०
५६. सुट्टी की मज्या ७१
५७. वास्तुशास्त्र न करिस नास ७२
५८. संगठन शक्ति एकता मा ७३
५९. आमी आजन सब एक ७४
६०. राजा भोज ७५

कथा-कहानी संग्रह

१. दूरलक डोंगर साजरो ७७
२. आंतरिक प्रेम ७९
३. घरका बुजुर्गः आउट डेटेड ८१
४. आमरो राजा भोज ८२
५. झाड़ीपट्टी को राजा जगदेव पवार ८४

- मोरो परिचय ८७

१.शब्द सुमन चरणों मा अर्पण

श्री गणेश प्रथम नमाऊ
हाथ जोड़कर करू प्रणाम
विघ्न हरो विघ्नेश्वर मोरा
दूर करो प्रभु विघ्न तमाम ।।१।।

दुजे नमाऊ सरस्वती मा
हाथ जोडकर करू प्रणाम
वाचा भाषा कला की देवी
दे माय मोला विद्यादान ।।२।।

ॐ शिव कुलदेवला नमाऊ
हाथ जोड़कर करु प्रणाम
कृपा करो हे शिवशंकर भोले
संकट करन पार, दे शक्ति अपार ।।३।।

आता नमाऊ कुलदेवी कालीमाय
हाथ जोडकर माते करु प्रणाम
बरसाव सुख शांति धनधान
होय जाय मोरो निर्धन को कल्याण ।।४।।

आखिर मा नमाऊ ब्रह्मा विष्णु महेश
हाथ जोडकर त्रिमूर्ति करू प्रणाम
करु मी शब्द सुमन चरणों मा अर्पण
प्रभू करो कृपा 'गूंज उठे पवारी' संसार ।।५।।

***

२. वाग्देवी स्तुति

तुच गौरी सावत्री सरस्वती महादेवी माते
तुच महागौरी महालक्ष्मी महासरस्वती देवी
तुच महामाया महाकाली गढकालिका देवी
वाग्देवी माय शत-शत तोला प्रणाम ।।१।।

तुच ब्रह्मलिला विष्णुलिला शिवलिला देवी
तूच गणवाणी व्यासवाणी नारायणी देवी
तुज जिव्हावाणी विणावाणी विद्या कला देवी
वाग्देवी माय शत-शत तोला प्रणाम ।।२।।

तुच शब्द ब्रह्म स्वरूपिणी ॐकार वीणा वादिनी
तुच विश्वज्योति दिव्यज्योति अंधकार नासिनी
तुच सूर्यप्रकाशिनी, चंद्रप्रकाशिनी आत्मप्रकाशिनी
वाग्देवी माय शत-शत तोला प्रणाम ।।३।।

तुच कुलदेवी महामाया महानिंद्रा कालरात्री देवी
तु दे ज्ञान विज्ञान विवेक बुद्धि सत्‌जीवन देवी
तोरी कृपा ठेव सदा कर आमरो जनकल्यान
देवी वाग्देवी माय शत-शत तोला प्रणाम ।।४।।

वाग्देवी जगतमाता, वाग्देवी जगत पिता
वाग्देवी जगतदात्री, वाग्देवी प्रचोदयात
वाग्देवी चरणों मा अर्पण 'मोरो अंतर्मन'
वाग्देवी माय शत-शत तोला प्रणाम ।।५।।

***

३. पवारी माय माऊली

पवारी अर्बुदा अवंति धार देवास की बेटी
पवारी क्षिप्रा नर्मदा बैनगंगा वर्धा की धारा
पवारी विक्रम भोज जगदेव की शब्द वाचा
पवारी आय पवार जनजन की मातृभाषा ॥१॥

पवारी वाग्देवी सरस्वती की अद्‌भूत रचना
पवारी शिव जगनारायण की दिव्य करुणा
पवारी सूर्य चंद्र दीपक की शुभ्र ज्योत्सना
पवारी आय पवार जनजन की मातृभाषा ॥२॥

पवारी मालवी हिंदी मराठी गुजराती की सखी
पवारी बघेली बुंदेली मराठी कोष्टी की दोस्ती
पवारी किरसान मजूर बंन्यार भाली बरठी की बोली
पवारी आय पवार जनजन की मायबोली माऊली ॥३॥

पवारी सन-तेव्हार देवी देव घरदेव की आरती
पवारी जातो कांडी सिलपाटा घानी की ध्वनी
पवारी बिह्या मा फुफा बाई कऽ तेल की कायी
पवारी आय पवार जनजन की माय माऊली ॥४॥

***

४. पवारी बोली

पवारी मालवा की राणी
बैनगंगा वर्धा कं धार की वाणी
पवार समाज की मातृभाषा पवारी
फूलहिन मा एक कमल पवारी ।

बोलन मा सोपी से पवारी
झुंझुरका की ओस आय पवारी
सकार की रमनिक भोर पवारी
झाडीपट्टी मा सिरमौर पवारी ।

जीवन काव्य को सृजन पवारी
खेत खलिहान को क्रंदन पवारी
बेटा-बेटीसाठी माय को स्पंदन पवारी
बायको को नवरासाठी प्रेम पवारी ।

हिरा कं माला मा कोहिनूर पवारी
पाय कं पायजम की झंकार पवारी
बिह्या बरात का मधूर संगीत पवारी
जातो कांडी उरवर मुसर की धून पवारी ।

प्रेम को एक भाव पवारी
दूख को आक्रांत पवारी
क्षत्रिय की हुंकार पवारी
किसान की आवाज पवारी ।

पवार संस्कृति को चिराग पवारी
पवार समाज की पहचान पवारी
पवारी एकता की सूत्रधार पवारी
पवार संगठन को प्राण पवारी ॥

***

५. पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो

से अगर खून पवारी त, बोलो पवारी घर हाट बाजार
पवारी आय आमरी तुमरी मातृभाषा, करो बोलचाल
पवारी तलवार की धार, पवारी धान की बाली
पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो मायबाप ।।१।।

पवारी मा समाई से माय को हरदय स्पंदन
पवारी मा से पितृ क्रंदन ना आशीर्वचन
पवारी मा झलके आमरी आन बान ना शान
पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो मायबाप ।।२।।

पवारी बोली आय क्षत्रिय पवार समाज की संस्कृति
पवारी बोली आय पवार समाज की संस्कार भारती
पवारी आय आमरो पवार गौरव वैभवशाली इतिहास
पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो मायबाप ।।३।।

पवारी गई त सांगो का तुमरी पहचान रही?
पवारी गई त सांगो का तुमरी जुबान रही?
पवारी गई त सांगो का तुमरी जान रही?
पवारी बोलीको पऱ्हेज नोको करो मायबाप ।।४।।

नेता आमरी पवारी क बल पर आवसेत चुनकन
पर आयोपर चुनकन भूल जासेत स्वजन
आता कसा बन गया देखो आपलाच दुर्जन
पवारी बोली को पऱ्हेज नोको करो मायबाप ।।५।।

***

६. गौरवशाली पवार इतिहास

रचिस परमार राज को पाया बीर धूमराज न ऽ
मार शक विदेशी, उभो करिस साम्राज्य विक्रम न ऽ
बन राजा को बैरागी, रचिस त्रैनीतिशतक भरतरी नऽ
असो से आमरो गौरवशाली पवार इतिहास ।।१।।

बसाईस धार नगरी, बैरिसींग परमार नऽ
बनाईस राजधानी वोला आम्हरं राजा भोज नऽ
भयो मालवा नाहान को मोठो, रचित सुवर्ण इतिहास
असो से आमरो गौरवशाली पवार इतिहास ।।२।।

राजा बनकर नगरधन ना चांदा को राज करिस जगदेव नऽ
डोई चढाईस चामुंडा ला, तसोच दान करिस कंकाली ला ।
नही करीन सहन मुगल अत्याचार पोवार आया मध्यभारत मा ।।
असो से आमरो गौरवशाली पवार इतिहास ।।३।।

बांध धुरोपार, करिन जमीन सवान, बनी धान की खान
वैभवशाली जमींदार, पटील, बन गया परिश्रमी पवार
पवार म्हणजे सदाचारी सदविचारी कर्मठ आय समाज
असो से आमरो गौरवशाली पवार इतिहास ।।४।।

बदलेव जमानो किरसानी भई कनिष्ठ नोकरी श्रेष्ठ आज
पवार पर अबवरी जाग्या नही भया आता खुपच खराब हाल
जागो आतातरी, धरो शिक्षण, नोकरी धंदा की नयी नयी बाट
नयो युग मा बदलो सोच रचदेव गौरवशाली इतिहास ।।५।।

***

७. मी पवार मोरो परिचय सुनलो

मी पवार मोरो परिचय सुनलो
धीर, गंभीर सुशील कर्मठ गुण गुनलो।

क्षत्रिय से धर्म मोरो निर्भय से जीवनमान
आत्मनिर्भर कर्मप्रधान चरित्र से निर्मल।

रूप रंग नही सिरफ सुंदर मोरो
आचार विचार भी ठेऊ शुभ्रतम।

दुख झेलु सुख देऊ मी सबला
भुखो मी रहु रोटी खिलाऊ उनला।

जीवन मा काही मुलगुण मोरा देखो
पाहुना की मनलक आमरी सेवा देखो।

मी पवार पर नहाय रत्तीभर अभिमान मोला
दरिद्री दुखी अडी अड़चन मा लेव आजमाय।

बगला भक्ति पाखंडी मनलं मी दूर
आपलं मेहनत का मी बेचसु फूल।

कौन होता ना का भया नही कव्हन की बात
इतिहास सोडो पुरानो, रचदेव नवो इतिहास ।।

***

८. पवार कभी झुकऽ नही....

पवार तिनका नही आग को गोला आय
पवार चिंगारी नही अग्निकुंडकी ज्वाला आय
पवार देविला जल नही खून चढ़ाय
पवार कभी झुकऽ नही दुनिया ला झुकाय ।।१।।

पवार जंगचढी तलवार लऽ युद्ध नही लढ़ऽ
पवार लंगडा घोडा की सवारी नही करऽ
पवार अंगुर नही लोहा का चना जबाय
पवार कभी झुकऽ नही दुनिया ला झुकाय ।।२।।

पवार तुफान बन चट्टान लक टकराय
पवार गोटा बन आग पर हमखास चलय
पवार दीपजोत बन अंधारो मिटाय
पवार कभी झुकऽ नही दुनिया ला झुकाय ।।३।।

पवार दानदक्षिना नही, परिश्रम पर करसे विश्वास
पवार नसीब नही आपलऽ पुरुषार्थ पर करे नाज
पवार पत्थर पर मारे पाय त पानी फुट पड़ जाय
पवार कभी झुकऽ नही दुनिया ला झुकाय ।।४।।

***

९. माय मोरी

माय मोरी मायाळू
माय मोरी कष्टाळू
माय मोरी चट्टान
माय मोरी तुफान ।।१।।

मायला नही भूख
मायला नही ताहान
मायला नही थकान
मायला नही आराम ।।२।।

माय घर की गौरी
माय घर की लक्ष्मी
माय घर की सरसती
माय घर की देवी ।।३।।

गरीबी जसी उभी पहाड़ी
माय बनाये ओला मोवरी
संकट को जबं फुटं बांध
माय फटकन बांध खांड ।।४।।

दादाजी कर्जा की करे चिंता
कहे आता कसो करू भगवंता
माय कहे नोको काही करोजी चिंता
या लेव्ह मोरी जमापुंजी आत्ताच ।।५।।

मायला खानपान को बड़ो ध्यान
मायला आमरो अभ्यास को रव्ह ख्याल
मायला देव धरम को रव्हसे ख्याल
मायला रव्ह आरती मुप्पाट ।।६।।

पाहाट त रातवरी काम मा मगन
नही थकान ना चेहरापर सिकन
नही पता कोनं गोटा की बनी होती
माय होती घर की जीवन जोती ।।७।।

कोनी तिखा कोनी खारा
माय मुख लं बहे मीठी धारा
नही कोनी नहान ना मोठा
माय प्रेम करं सबला न ।।८।।

माय माय करु मी केतरो
माय दिससे रोज सपन मा
माय माय करु मी केतरो
माय दिससे आंगण मा ।।९।।

माय माय करु मी केतरो
माय भरी से हरदय मा
माय माय करु मी केतरो
आसू भर गया डोरा मा ।।१०।।

***

१०. माय की महिमा

खंम्बुरा जोड़े पाई-पाई मोरी माय
कसे सामा मोरो मायबाप की आय ।

साखर गुड सुपारी लवुंग इलायची
चिवरा लाळू मोरं माय न बांध देईस।
संदुक पलंग गद्दा चद्दर बिछानो उसी
गुंडगुंडी सब मोरो माय घरकी ।।१।।

भेटी मोला भस गाय बकरी दान मा बिह्या मा
काही नही करिस कमी बाप न मोरो आंदन मा
दुध-दुबता दही-मही भाजी पालो को करे व्यापार
माय जमावसे रक्कम आपली बारो मास ।।२।।

लेय नही दवाई-पानी चाहे होय जाय बिमार
'देवला लेजानो रहे त कोन बचाये' मंतर पाठ
दुख मा गोटा सुख मा मोम बनसे मोरी माय
हारी नही कभी लडाई जीवन मा मोरी माय ।।३।।

रिस्ता नाता काही मैला काही गोरा कारा लाल
माय को रिस्ता ममता भरी जसी गंगा की बहती धारा
दादाजी की कमाई फसल पर रव्हसे निरभर
पर माय क बचत लक संकट मा चले घर ।।

आपुन पेहरं से फाटका आंगी लुगड़ा मोरी माय
पर सबको कपरा लत्ता को रव्हसे वोला ख्याल
दादाजी मोरा परबत माय मोरी नदी की धार
घर भर को सुख दुख को खयाल रव्हसे वोला ।।

***

११. माय भई सबला ओझो

चार टुरा की माय बुरगी भई
इतं की नही ना उतं की रही।

पहलो कसे मायको मीच काहे करू
सब करंसेत मजा त मी कायला मरू ।
दुसरो कसे माय ला गाव की गोडी
बेस होये गर माय गावच रही ।

तिसरो कसे मायला यहां नही गमं
मायको जीव कधी यहां नही रमं
चवथो कसे भाऊ घर से मोरो लहान
रव्हन दे माय ला जहां से वहांच ।

बहुइन की तं भाऊ नोकोच कहो
काम ना धाम बला या काहे पालो।
जींदगी भर सासूनं आमरं पर करिस राज
बुरगी भई पर अईठ गई नही बाहार ।

आमी न काही एको जनम को ठेका नही लेया
दवा दारू डाक्टर का पैसा भी आमीनच देया ।
सासू ना सुसरो आता सब बिसरो
नवरा बायको मा नही पायजे तिसरो ।
सासू क नावलक दचड आपट होसे
तरी बिचारी सासू चुपचापच, रव्हसे ।

एक शब्द कव्हन की वोला उजागरी नही
काही कहिस तं कसेत बुरगी भई आता बही
सब तिरस्कार देख आनसे डोरामा आसू
तुमी रव्हो सुखमा कबं कबं सरग जासू ।

***

१२. मायघर

होसेत रिस्ता जुना जगमा, पर नही कभी मायघर
मायघर की यादलकच होसे दुख त्रास रफु चक्कर
सासुरवास मा काम पर काम, सासू को तुफान
मिलसे मायघर मा सरग की परी को आराम ।।१।।

मायघरमा जहां वहां बिखरी सेती मोरं बालपण की याद
कहीं मायकी झापड़ कहीं आसू कही खुशी की झलक
नहानोपण की भानी बटकी गिलास मा भर्री से सवाद
लेपसी-अक्ष्या ना तोर को रसा की आवसे अजभी याद ।।२।।

झुरता झुरता पारना लग जाय मोला गाढ़ जप
ओढाय देत होती मोरी माय आंगपर रजई गरम
उठजात होती अचानक रातमा कहू दुखसेत मोरा जाय
चुरत रव्ह पाय मोरा माय मोरी लोरी रातभर सुनाय ।।३।।

अलबम मोरो नहानपण को आय याद भंडार
भेटसेत मोला मोरं नहानपण का साथीदार
सेत आबभी टंगी बिंदी, गुंडी बदक मिठु की फोटो भितपरा
रव्हसेत देत सदा याद मोरी, माय घरं सबजनला ।।४।।

आई बेरा वापस जानकी घर आपलं, डोरालक आसू टपकं
दादाजी कसे भरेव गरोलं 'सब धर बाई सामायन आपलो'
माय कसे 'बेटी यव तोरो खाजोको झोलना पिपा ठेव साथ'
नोको टपटपाओ असो आसू की धार, सार करो हासत माय ।।

***

१३. जहां वहां अव्वल पवार नारी

नही रही आता घर की कैदी
नही रही छुईभुई कपरा की गुड्डी
नही रही चार दिवार की कठपुतली
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।१।।

नही कम काही सिकनो मा भी
नही कम काही मेहनत मा भी
नही कम काही मेरिट मेडल मा भी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।२।।

स्कुल मा मास्तर पवार नारी
कॉलेज मा प्रोफेसर पवार नारी
रिसर्च केंद्र मा वैज्ञानिक पवार नारी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।३।।

अस्पताल मा डाक्टर पवार नारी
आय.टी.मा इंजिनिअर पवार नारी
न्यायालय मा वकील पवार नारी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।४।।

आय.ए.एस. पवार नारी
आय.एफ.एस. पवार नारी
आय.पी.एस. पवार नारी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।५।।

ग्रामपंचायत सरपंच पवार नारी
पंचायत समिति सभापति पवार नारी
जिला पंचायत अध्यक्ष पवार नारी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।६।।

सुंदरता मा अव्वल पवार नारी
चरित्र मा अव्वल पवार नारी
कामकाज मा अव्वल पवार नारी
जहां वहां अव्वल पवार नारी ।।७।।

***

१४. एक बेटी की व्यथा

दादाजी, पठाया रव्हतात मोला गर स्कूल मां तुमि
त दिवसभर घर रहकन चुल्हो नही फुकती मी
भाऊ सरिखो पढ लिखकन अफसर बन जाती
बनती मी काबिल, जग मा नाव कमावन येती ।।१।।

बनी रव्हती मजबुत येती, आपलं पाय पर उभी
खेलत रह गई लंगडी खो खो कब्बडी ना गोटी
सानिया, सायना, सिंधू जसी खिलाड़ी बनती
बनती मी काबिल, जग मा नाव कमावन येती ।।२।।

सासु को मी असो कुचला मार नही खाती
नही नवरा की गारी लात बुक्की हरदम खाती
नही गरो नाक कान लक बोंगडी उजड़ी होती
बनती मी काबिल, जग मा नाव कमावन येती ।।३।।

मी भी सिकती मी भी पढती तुमरी शान बढती
सुसरो घर धन संपदा ऐश्वर्य कीर्तिच कीर्ति बढती
लिख पढ़ कर पुढ़ं बढ़कर आपला सपना पुरा करती
बनती मी भी काबिल, जग मा नाव कमावन येती ।।४।।

***

१५. नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला

मी बी.ई. भई सेब जसतस पास
हैदराबाद जानको से मोला आज
कम्पुटर कोर्स मा लगेय नम्बर मोरो
नोको सांगो बिह्याको रिस्ता मोला ।।१।।

डिप्लोमा भेटेव जसजस आबं मोला
आनलाइन पर देखु आपलो रिझर्ट
पहले करियर बनावनो से मोला
नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला ।।२।।

नोकरी भेटी पुना मा मोला
फॉरेन को से आफर मोला
यवच मौका से उभरन ला
नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला ।।३।।

नोको सांगो टुरा की सुंदरता
नोको सांगो वोकी मालमत्ता
नोको सांगो वोकी जनम पत्रिका
नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला ।।४।।

आबंतं मी भई सिरफ २५ की
ढुंढ लेवुन मी आपलो जीवनसाथी
तुम्ही काहे करसेव एतरी जी चिंता
नोको सांगो बिह्या को रिस्ता मोला ।।५।।

***

१८.संसार मा कोन से मोठो? = बेटी

का संसार मा मंदिर से मोठो?
उतं से यनं धरति पर उभो
का संसार मा धरति से मोठी?
वा त से शेष नाग पर उभी ।

का संसार मा शेषनाग से मोठो?
शेषनांग त से शिव क गरो मा लटक्यो
का संसार मा शिव भगवान से मोठो?
उ तं से पहाड़ कैलास पर उभो ।

का संसार मा पहाड़ से मोठो?
उ तं से वीर हनुमान क बोट पर उभो
का संसार मा वीर हनुमान से मोठो?
उ तं से भगवान राम को कोरा मा बस्यो ।

का संसार मा भगवान राम से मोठो?
ओला त हराईन लहान लवकुश न ।
का संसार मा लवकुश सेत मोठा?
उनला द जनम देईस सीता न ।

का संसार मा सीता से मोठी?
सीता त आय जनक की बेटी ।
का संसार मा से बेटी मोठी?
हो हो, संसार मा से बेटी मोठी ।

***

१९. बेटा मोरो जी नम्बर वन

हरदम परीक्षा मा मॅरिट वन
तेज दिमाग को देसे उ दर्शन
स्कुल कालेज को करं नाव रोशन
बेटा मोरी जी नम्बर वन ॥१॥

पहलोच डाव मा भयो सिलेक्षण
आमरो बाल्या गयो तुरत लंडन
बनाईस बायको फॉरेनर मेम
बेटा मोरो जी नम्बर वन ॥२॥

बसाईस आमला एरोप्रेन
भया दंग देखकर लंडन
फिराईस पुरो देश इंग्लंड
बेटा मोरो जी नम्बर वन ॥३॥

मटन चिकन खानो से हरदम
करसेत बहुबेटा रम व्हिसी प्राशन
बहुका कपरा देख लगे जी सरम
बेटा मोरो जी नम्बर वन ॥४॥

भया चार महिना मा घर वापस
बुढी लगाव बेटा की रट हरदम
गई सटक एक दिवस बेटा बेटा करत
बेटा मोरो जी नम्बर वन ॥५॥

आयेव भेटन आसू पोसन
बिकीस घरदार जमीन सटकन
पठाईस मोला एवन वृद्धाश्रम
बेटा मोरो जी नम्बर वन ॥६॥

***

१६. दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार

नही पायजे धनदौलत, नही पायजे हिस्सा
नही मांगु सोनो चांदी नही पायजे मोतिमाला
दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार
करदेव मोला कॉलेज सिक्सन बहाल ।।१।।

नही बननो रानी, नही महारानी मोला
नही मनसा मोरी राजा-राजवाडा ना महाल
दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार
करदेव मोला कॉलेज सिक्सन बहाल ।।२।।

नही पायजे ब्रांडेड कुरता नही पायजे सलवार
नही मांगु स्कुटी बाईक नही मोटर कार
दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार
करदेव मोला कॉलेज सिक्सन बहाल ।।३।।

नही करनो मोला आबच शादी बिह्या
नही करनो काही नौकरी ना रोजगार
दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार
करदेव मोला कॉलेज सिक्सन बहाल ।।४।।

नही पायजे एफ.डी.एस.डी. नही एल.आय.सी.
नही पायजे खंड भूखंड नही काही फल्याट
दादाजी बस सुनलो मोरी एकच पुकार
करदेव मोला कॉलेज सिक्सन बहाल ।।५।।

***

१७. हो-हो मी तुमरी तुमरीच बेटी आव

कभी जन्मी कभी अजन्मी मी आव
कभी खुशी कभी मातम मी आव
कभी घर की छाव तं कभी धूप आव
हो-हो मी तुमरी-तुमरीच बेटी आव ।।१।।

कभी बेटी को भेटसे मोला लाडप्यार
कभी बहिन बन मिलसे भाई को दुलार
कभी बायको बन भेटसे नवरा को प्रेम अथांग
हो-हो मी तुमरी-तुमरीच बेटी आव ।।२।।

कभी ममता की मुरत मी आव
कभी देवी की सुरत मी आव
कभी मोमबत्ती सी पिघलनेवाली मी आव
हो-हो मी तुमरी-तुमरीच बेटा आव ।।३।।

कभी चट्टान सी कठोर मन की मी आव
कभी आपलच आसू पिनेवाली मी आव
कभी जलती चिराग की ज्याती मी आव
हो-हो मी तुमरी-तुमरीच बेटी आव ।।४।।

***

२२. जबं सासू बोहू की खटक जासे

काही ना काही त दार मा कारो रव्हसे
जबं सासू बोहू की खटक जासे ।।धृ.।।

जखम त जरूर कोनी घन ठोक करसे
जबं सासू बोहू की खटक जासे ।
दुध मा निंबु तं कोनी तरी पिरसे
जब सासू बोहू की खटक जासे ।।१।।

पाप कोनी भी कर छूपे दिवस केतो
एक ना एक दिवस त घड़ा फूट जासे ।
देखंसेत एक दुसरो ला पानी मा
देखो कसी नफरत जनम लेसे ।।२।।

सासू गई बाडी बोहू सोई घर मा भयेव झगड़ा
दुखसे डोसका वोको, सासूला आय गुस्सा ।
सासूकी हाक ला बोहू बेसुनी करसे
सासू पुरं घरला डोस्कीपर धरसे ।।३।।

सासू त आय मोरी माय पर पानी मा देखसे
मोरा भिकारी घरकी आई महारानी वा कसे ।
येती नफरत काहे भरी दिलमा मोरो सासू कं
जबं लक्ष्मी महालक्ष्मी को आमरो उनको नातो से ।।५।।

बहू दिवसभर काम कर कर हाड घाससे
सासू चुक पर चुक काढसे ना उतार देसे ।
जब पड़से बिमार सासू, मंग कोन करसे
हाथपाय चुरसे ना बाम कोन लगाओ से ।।५।।

यनं घर साठी करे बोहू केतो भी मरमर
सासू को तोंड वाकडो को वाकडोंच रव्हसे।
मी भी भई आता सहनशक्ति की पक्की रट्टी
जब भी देखु सासू को तोंड त हासी आवसे ।।६।।

***

२३. सासुला जवाईकी मोठी फिकर

जवाई दिससे गा बाई फाटक मा
पारा नही गा आनंद ला ।।१।।

जवाई आयो आता आंगन मा
पानी साबुन ठेवो छपरी मा ।।२।।

देखो रे कितऽ सेत कोंबडा
चटकन काटो एक दुय ला ।।३।।

बातबात मा बोवा जासे दिल्ली ला
तुमी आरो आपलऽ जिबली ला ।।४।।

जवाई को गयेव चोरी झोरा
चढाव ओला नवा कपड़ा ।।५।।

जवाई नही खाय धेंग्री चिवड़ा
बनाओ घिव को चिंब हलवा ।।६।।

जवाई का बोट मा नाहाय अंगठी
देयदेव तुमी जी आपलं बोट की ।।७।।

जवाई ला सोवाओ छप्पर पलंग पर
तुम्ही जमाओ आपलो डेरा तखत पर ।।८।।

आवाज देव जी बुध्या भालिला आवन ला
आमरऽ जवाई बोवा क तेल मालिस ला ।।९।।

घोरा-गारी सांगो जी आता जुपन ला
टाइम पर पायजे पोहचेव ठेसन ला ।।१०।।

***

२०. कमाल को बेटा

जन्मभूमि लक कर्मभूमि को रस्ता लेईस बेटा न मोरो
बंगला गाडी फॉर्म हाऊस लेईस बेटा न मोरो
साज सामान लक घर भर देईस बेटा न मोरो
झोपडी ल निंघ रंगमहाल बनाय देईस बेटा न मोरो ।।१।।

बाथरूम पर करीस दुय लाख खर्च बेटा न मोरो
किचन करीस माडुलर चकाचक बेटा न मोरो
ड्राइंगरुम ला बनाईस झकाझक बेटा न मोरो
आलीशान हैप्पी व्हिला बनाईस बेटा न मोरो ।।२।।

बगिचा का मुगल गार्डनच बनाईस बेटा न मोरो
हिरवो कच्च लॉन मोठो बनाईस बेटा न मोरो
खेड़ा को टुरा पर पॅराडाइस बनाईस बेटा न मोरो ।।३।।

दिवसभर करसे धकधक रात्री क्लब जासे बेटा मोरो
लॅपटॉप मोबाईल टिवी मा खोयो रहसे बेटा मोरो
विकएन्डला फॅमिली लेजासे आऊटिंग बेटा मोरो
फुर्सत नही दिनरात खपेव रव्हसे काम मा बेटा मोरो ।।४।।

पाच बरस भया घर नही आईसे कधी बेटा मोरो
मायबाप भाईबंद की सूरत नही देखीस बेटा न मोरो
नही कोनी मरेव सरेव को हाल पुसीस बेटा न मोरो
घरदार ना आमला लावारिस सोड़ देईस बेटा न मोरो ।।५।।

***

२१. भाऊ भौजाई मोरा दुय सुंदर डोरा

भाऊ भौजाई मोरा आत दुय सुंदर डोरा
सुखदुख मा मोला वय आवसेत याद
मायाबाप गया पर भई नही मी अनाथ
सुखदुख मा मोला से उनकी च साथ ।।१।।

चंगा अठ्ठा पो लंगडी, लपनडाव सेत मोला याद
भाऊ मोरो जीतकन हारऽ मोला खुश ठेवन साथ
भाऊ बहिन मी अभ्यास करजन एक साथ
होमवर्क ला भिई नही कभी मोला होती भाऊ की साथ ।।२।।

बारी आई भाऊ बटवारा की,बाटनी भई शांत
मामाजीनं पुछिस मोला, सांग तोरं मन की बात
भडकन कयदेयव मी, हिस्सा नही पायजे मोला
बस दुही भाऊ भौजी प्रेम लं रहो हासो साथ-साथ ।।३।।

जमीन बनाओ चौगुना होये धन की बरसात
सजायकन ठेओ मोरो मायका याच मोरी आस
सालोसाल मी चढाऊ भाऊला राखी को गहना
काही नोका मोला भाऊ, प्यार की प्यासी तुमरी बहिना।।४।।

यनं घर की आव मी बेटी मोरो मान असोच ठेवो भाऊ
मायघर की चटनी आंबिल मोरी बनाय ठेवो भाऊ
भाऊ भौजी मोरी इठ्ठल रुकमायी, मी भगत उनकी
दुनिया चाहे होये बैरी मोरा भाऊ भौजी सेत मोरो साथ ।।

***

२४. रिस्ता

जनम क साथ बनसेत रिस्ता सात पीढीका ।
काही पक्का काही कच्चा काही मिठा काही खट्टा ।
मंगलसूत्र भी बांधसे रिस्ता सात पीढीका
नवराबायको, सासु-सुसरो न जाने केतरा ॥

रिस्ता की गाडी चलं उतार चढाव मोड़ जोड़ को रस्ता
रिस्ता चले नाव बनकर धार, मंजधाव ज्वार तोड़कर
रिस्ता उड़े विमान बनकर हवा, पाणी बादर काट कर
रिस्ता को नाव से चलनो जीवन-जिवांतर ।

जनम-मरन बिह्या-बरात मा रिस्ता जमाये भीड-भाड़
जसा झाड़ पर पंछी जमावसेत आपलो डेरा मेला
हासत नाचत गावत प्रेम की होसे सुहानी बरसात
रफुचक्कर होसेत लोक जसा बादर बरसात बाद ।

बेटी को रिस्ता मायला होसे मिठो ना बोहुको खट्टो
मायघर का पाहुना प्रेम को झरना ना नंनद दुखनो
नवरा-नवरी बेटा-बेटी को बंधन रव्हेस अटुट बंधन
काही रिस्ता स्वार्थ भरा तं काही दुनिया को दस्तुर ॥

रिस्ता मा जबं होसे तुलना मी उंचो तु बोना
कबको आय यव रईस मोरो बाप भी कम नोहतो
पहले करो घाव ना मंग लगावनो ला मरहम घास
'बगल मा छुरी मुख मा राम' निभाये नाता रिस्ता ॥

रिस्ता दिखाये रस्ता जनकपुरी नही त लंका
करो कृष्ण-सुदामा को रिस्ता बहाओ प्रेम सरिता
रिस्ता आती प्रेम का धागा बांधो पक्का, पेहरो माला ।
रिस्ता बनाओ तेल बातिका, जग मा करे उजाला ॥

***

२५. पोरा

पोरा आमरो मोठो सन
आती बैल आमरा देव
उनकी मेहनत पर आमरो जीवन
उनकी सेवाच आमरो धरम ॥१॥

मोहबईल पोरा ला विश्रांती
डोंगी मा मेखन खल्लीढेप खासेती
मोहबईल ला मोहु चोभरा पिवसेती
कवरी करसेत आराम ल बससेत ॥२॥

देखो, आमरी जोळी सुंदर कसी
कसी साजरी खोंड सिंग सिंगोटी
तोंड सुंदर छाती हाथी जसी मोठी
रंग-बागड़ बासिंग सिंग पर सजती ॥३॥

तोरण खाल्या उभी जोड़ी
घंटी-घोलर की गूंज उठी
जसी भई गर्जना सिंग डफरी की
बैल जोडी मुंडाच-मुंडा घर छुटी ॥४॥

घर आई बैल जोडी पाय धुवाओ ।
मस्तक पर चंदन कुकु टिका लगाओ
अक्षद फुल लं हाथजोड पाय लगो
घिवभात पुरणं रोटी बड़ा खववावो ॥५॥

बईल आत किरसान का भाग्यदाता
बईल आत किरसान का अन्नदाता
बईल आत किरसान का जीवन दाता
बईल आत किरसान का पिता माता ॥६॥

***

२६. मंडई

मंडई भरी से आखर पर
मरदमाना बस्या धडी पर
आईमाई जमी टेकर पर
दुकान सज्या गली पर ।

दंढ्यार भरी चबुतरा पर
ढोलकी बजे टन टना टन
हार्मोनियम को सूर पर
लोक रम्या नाचगाना पर ।

नाच्या की नजर नोट पर
बेवड्या की नजर दारू पर
सोंगाड्या की नजर सिंगाड़ा पर
काही मकड्या चाय टपरी पर ।

रामसीता आया रथ पर
रावन ला उभो करीन गाडो पर
हनुमान तेल ओकं मशालपर
वा रामनं फेकीस रावन पर ।

पटीलनं गजकुंडी फोडीस गोटा पर
रथ का घोडा सुट्या मुंडा सड़क पर
लोक परान्या देखन मंदीर मांडो पर
दंड्यार चली मस्त रंगत रात भर ।

***

२७. पाणिग्रहण

मामाजी आया एक रिस्ता धर कन
टुरा मोरो सारो को, से गोरो उचो कद
घर जमीन जायजाद पैसा से भरपूर
रिस्ता से उत्तम तुमी हो कहो फकत ॥१॥

मामाजी चलो अजच घरदार देखन
जमेव सबला त उनला सांगबिन आवन
मामाजी संग गया चार जन करीन पसंद
दुसरो पक्ष भी आयेव भयो पक्को संबंध ॥२॥

पंडित क पोथी पंचांग मा गुण भेटया उत्तम
निपटेव टिका ना पायलगनी फलदान सब
तारीख भई पक्की लग्या दुही तयारी करन
छपी पत्रिका बावस्या पठाईन याद कर कर ॥३॥

बिह्या की आई घड़ी सुरु भया मांडो मा नेंगचार ।
डेरीपूंजत आईमाई, जवाई तोरण सुत गोथाय
बाइंनऽ खनमाती आनीन, बनाईन नांदड देवघर मा
नांदड ज्योति पेटी, बरपाना जवाई देसे पैसा लेय दोणा ॥४॥

माहे दसाई तेलसाई कुम्भारीन न सजाईस दुकान
काकन बांधीस भाऊन आता ओला नवरदेव को मान
आई बिजोरा की बरात करो कपरा बिसरो को चढावा
भयी बिचोरा बरात खाना, सुरू करो हरदी अहेर आता ॥५॥

नवरदेव की बरात आई आखर पर, चलो उतारन दुल्हा
नवरदेव न पहले मारीस मांडो मंग जनवासा चले घोड़ा
मंगलास्टक भया नवरी नवरदेव न करिन माल्यार्पण
मंग चली सप्तपदी ना पाय परवारनी पाणिग्रहण ॥६॥

***

२८. कारतिक पुरनिमा माहत्म्य

कार्तिक की पुनवा आय तिरपुरी पुरनिमा
तिरपुरासुर को करिस बध शिव न वा पुरनिमा
चातुरमासी देव देवी जागरण की या पुरनिमा
भगवान विष्णु मत्स्यावर प्रगटिनी पुरनिमा ।।१।।

बाली ला बैकुंठधाम वामन न पठाईस वा पुरनिमा
शिव पारबती ला कारतिक भयोव होतो वा पुरनिमा
तुलसी झाडलक वृंदादेवी प्रगट भई वा आय पुरनिमा
रास नाच प्रसन्न कृष्ण की राधापूजन की या पुरनिमा ।।२।।

पुष्कर जलकुंड मा आंग धोवन की आय या ब्रह्म पुरनिमा
पंढरपूर इठ्ठल रुकमायी क चंद्रभागा स्नान की या पुरनिमा
गंगा जमुना सरस्वती गोदावरी बैनगंगा स्नानादी पुरनिमा
नदी सरोवर ताल देवदीपमाला प्रज्वलन की आय या पुरनिमा ।।३।।

विष्णुदेव पूंजन अन्नकुट अरपन तीर्थ भोज की पुरनिमा
पितर तर्पण श्राद्ध भोजन पितृदेव कृपा की या पुरनिमा
सद्भाव, सद्कर्म धर्म, दान पुण्य कमावन की पुरनिमा
ब्रह्मा विष्णू महेश भक्ति की आय या कारतिक पुरनिमा ।।४।।

***

२९. घर की रौनक कहां चली गई

फाटक बेस्कड तुटी कसी?
धडी खस गई येती कसी?
कोठा पड गया असा कसा?
गायढोर भया सब कहां लापता ।।१।।

आंगण मा दिसं मांडो नही ।
पाटन पर दिसं तनिस नही ।
छपरी पर को तखत गयो कहां?
हाथपाय धोवन पानी से कहा? ।।२।।

बिहिर की मोट राहाट कहां गई?
भेंडी मिरची बाडी सपा सुक गई।
कांदा लसुन भेद्रा कहां छुप गया?
बाडी का असा काहे बेहाल भया? ।।३।।

खेती देसेव कसेत बटई ठेका ।
ढोला भया आता खाली खोका ।
सोनो चांदी भई ठन ठन गोपाल
घर की रौनक कहां चली गई? ।।४।।

***

३०.रंगत कसी बदल गई!

चुल्हो-चुल्होली बेठ गई, बरनर सेगड़ी आई
कंडा काडी-झिलपी गई, सिलंडर ग्यास आई
भई लापता पिऱ्हा-चौकी, आई आता टेबल खुर्ची
देखोजी किचन आमरो, रंगत कसी बदल गई ।।१।।

उखर-मुसर जातो कांडी गई, आटाचक्की आई
सिल-पाटा खल-बत्ता गयो, ग्राइंडर-मिक्सी आई
भई लापता पावसी बाई, आता चाकु-छुरी आई
देखोजी नहानांग आमरो, रंगत कसी बदल गई ।।२।।

बईल-बोदा घोड़ा गाडी-बंडी गई, ट्रॅक्टर-ट्राली आई
रेहका खासर छाटी गई, बाईक मोपेड मोटर आई
भया लापता ढोली ढोला, पाटन बनी चिकन चोपडी
देखोजी दुनिया आमरी, रंगेत कशी बदल गई ।।३।।

घरलक पोवारी बिदा भई, मराठी हिंदी अंग्रेजी छाई
माय अजी कव्हन लगे सरम, मम्मी डॅडी की फॅशन चली
नही आता काका काकी, कव्हन लग्या सब अंकल आँटी
देखोजी पोवारी आमरी, रंगत कसी बदल गई ।।४।।

***

३१. बाप गयो सरग मा, मी फसेव नरक मा

अर्धी उमर मा मर गयो बाप मोरो
मॅट्रीक पहलेच मी अनाथ भय गयो
मंधीच शिक्षण टुटेव, दुख को फुटेव पहाड़
सब सपना गया तुट जींदगी मोरी गई उजाड़ ।।१।।

दवाखानालं घर आई लास, बाई की से बाट
गाडो काड़ी को भयो सार, निंघी घरलं बरात
दशक्रिया की आई बारी, गाड़ी भर चली सवारी
तिरथ पर मुंडन ना पिंडदान,अस्थि विसर्जन पडेव महांग ।।२।।

तेरवी की सुरु भई तयारी, भई लिपा पोताई
तनेव शामियाना आचारी बनावसे पचरंगी खाना
पाहुनाइंकी रेलपेल, पंगत पर पंगत, चली दिनभर
भाली बरठी आचारी बिछायतवालों न लुटिन जमकर ।।३।।

बटवारो पर बटवारो, भई जमीन चारीस की एकर चार
पहलेकोच से कर्जा को बोझा, आता मानुस बन्यो कंगाल
मृत्यु भोज न गाडीस मोला जमीनमा, आबच मरण ला
बाप गयो सरग मा मी फसेव कर्जा क नरक मा ।।४।।

***

३२.काहे करेत सामूहिक बिह्या धनी क्षत्रिय पवार

गई कहां मोहरली की ओली ताजी डेरऽ
नही दिसत आता हिवरा बेरु मांडो परऽ
गई कहां वै दाट जांबुर की मोठी डघालऽ
नही दिसऽ आता बारा डेरी को मांडो ॥१॥

गया कहां रंगीन फुंदरा का बासींगऽ
नही दिसत आता लुगडा कापटा अहेरऽ
गया कहां आता बिह्या दस्तुर का गीतऽ
नही दिसत आता कोनी आईमाई गावनारऽ ॥२॥

गयोव कहां झुलझडपीलं सजेव वु गुडुरऽ
नही दिसऽ आता रेहका की लम्बी बरातऽ
गया कहां बाजा का डफरी बासुरी ना सिंगऽ
नही आवऽ आता घोलर घंटी को सूरऽ ॥३॥

गयो कहां शुभ गोधुली बेला को वु मुहुर्त
नही लगऽ सरम जनाना नाचसे कुदकुद
गया कहां आता उच्च संस्कृति संस्कारऽ
नही दिसऽ आता कावड्या संग बरात ॥४॥

गयो कहां सांगो मांडो मारन को दस्तूरऽ
नही दिसऽ आता जनवासो पर गनोबा पूंजा ऽ
गयो कहां वु गुंड बटकी आंदन को दस्तुरऽ
नही दिसऽ आता पंगत पर पंगत की बहार ॥५॥

गई कहां सुखा गरिबी दरिद्री की सोचऽ
चलिसे आता होटल मंगल भवन की ओढऽ
गई जमीन एती अनखी जाहे एकर दुय चारऽ
काहे करेत सामूहिक बिह्या धनी क्षत्रिय पवारऽ ॥६॥

***

३३. आन बान शान

देखो आमरी से केतरी उची हवेली
देखता देखता परसे डोस्की की टोपी ।
डहलपर रांग लगी से लंबी बैलजोड़ी की
सेती खंडी दुय खंडी कोठाभर गायी-गोऱ्ही ॥१॥

भसी-हल्याहिन की नही से काही कमी
आंगणभर फिरसेत इतं उतं बकरा-बकरी ।
दमछक उभी से काबुली घोडा की जोड़ी
थाट बाट मा पवार काही कमी नही ॥२॥

से बाड़ा मा नौकर-चाकर बन्यारिन की भरमार
कोनी फोड़सें काड़ी कोनी भरसे सुळ भारी
दुय टुरा भरसेत पानी, नाहानांग मथनी गुंडी
कोनी काटसे भाजी, कोनी बाटसे मिर्चा की चटनी ॥३॥

नोकर चाकर की कमी नही काहे काम करेत बेटा ।
बापदादा की से जमीन खुळ खुळ खाओ दारी ला
शहर कमावन जासेत जिनकं घरं दाना नही खान ला ।
आमला नाहाय काही कमी जींदगी गुजारन ला ॥४॥

सनतेव्हार ला भाली बरठी बढई ना खाती आवसेत ठावला
आफिसर फिरेत गावभर पर वाडा आवसेत बकरा खान ला
'रसी जल गई पर बल नही गयो' लोक कसेत आम्हला
का कमी से आबभी आमरं आन बान शान ला ॥५॥

***

३४. कोनतो समाज धरम निभायात?

लिख्यात पढ्यात मोठो कालेज मा प्रोफेसर बन्यात
पैसा की लगी लत घर मा ट्युशन केंद्र खोल्यात
एकभी समाज क टुराला फुकट मा नही सिकायत
मंग सांगो तुमीच कोनतो समाज धरम निभायात?

लिख्यात पढ्यात मोठो अस्पताल मा डाक्टर भयात
पैसा की लगी लत घर मा भी दवाखाना खोल्यात
एक भी पेसेंट की तुमिनं कभी भी फिस नही सोड्यात
मंग सांगो तुमीच कोणतो समाज धरम निभायात?

लिख्यात पढ्यात सरकारी विभाग मा इंजिनियर बन्यात
लुपछुप कर प्रायवेट घर बांधन को धंदा भी चलायता
अख्खो जीवन मा एकभी गरीब को घर नही बांध्यात
मंग सांगो तुमीच कोणतो समाज धरम निभायात?

लिख्यात पढ्यात मोठो कोर्ट को वकील बॅरिस्टर भयात
पैसा की लगी लत लड्यात केस खोटा नाटा ना धन कमायात
अख्खो जीवन मा एक भी पवार गरीबको केस नही लड्यात
मंग सांगो तुमीच कोणतो समाज धरम निभायात?

मोठो घर, दुयचार गाडी, फॉरेन का टुर मान्यात फिऱ्यात
पैसा की लगी लत जितं उतं बंगला प्लाट लेयात बांध्यात
अख्खो जींदगी मा का कोनी को २ टक्का को काम आयात
मंग सांगो तुम्हीच कोणतो समाज धरम निभायात?

***

३५. बटवारा

रव्हसे माय बाप बेटा बहु टुरू पोटु लक भरेव घर
जमीन-जायजाद, धन-दौलत मान सम्मान को घर
घर क वैभव ना एकतालक घबरासे पुरो गांव
एक दिवस बटवारा कर देसे सब नास सत्यानास ॥१॥

काही ना काही त दार मा कारो रव्हसे
बिना इस्तो को का कभी धुंगा फैलंसे
करे बिना घाव जखम कसी होये?
बिना छिड़के नोन आग कसी होये? ॥२॥

जर राज भी खुले बटवारा को त का लाभ
आये दिवस झगडा तंटा तना,तनी होय जासे
भाई भाई को दुष्मन, देवरानी जीठानी तुट जासे
माय-बाप, बहिन फुपा मोरी तोरी होय जासे ॥३॥

करो जमीन जायजाद सोनो नानो को हिस्सा
करो बईल खाट्या गाई भसी बकरी को हिस्सा
करो गाडो नांगर बखर दतार काडी फाटा को हिस्सा
करो रेहका छाटी भोवरी तुतारी जोता सिवर को हिस्सा ॥४॥

करो चुल्हा चुल्होली पिऱ्हा चौकी चाटु परी को हिस्सा
करो खाट पलंग गद्दा चद्दर उसी दरी को हिस्सा
करो पेटी संदुक बटवा, झोरा पिवसी को हिस्सा
करो कुलुप कुंजी, कंदिल, डपकी झाडू खराटा को हिस्सा ॥५॥

करो ढोला करंगी काली अनाज को हिस्सा
नोकर-चाकर बन्यार भाली बरठी को करो हिस्सा
माय बाप बहिन फुफा को भी करो हिस्सा
होता अजवरी स्वजन बन गया दुर्जन आता ॥६॥

***

३६. किरसान ला मारो लुटो जमकर

आओ मोला खाओ, सबदुन सस्तो से किरसान
गिधाड चील कुतरा डुक्कर मुंगी बनकर खाओ
खाओ खाओ पेटभर खाओ, डकार मारो
बोटी-बोटी नोच-नोचकर पेटभर खाओ ।।१।।

लुट्यात जमीन जायजाद सोनो चांदी जेवर
घोड़ा गाय भसी बकरी बईल सब जानवर
घर घसऱ्या कोठा पड्या तरी पेट नही भरेव
मारो किरसान ला लुट लुट कर, नंगा फकीर करो ।।२।।

भई दाढ़ी लम्बी, फाटेव पंच्या टोपी किरसान की पहचान
काया तेढी छाती अंदर दबी, पेट पापड ना तुटी फुटी जबान
जबवरी से धरती पर जीतो खाओ लुटो जीभर मोला
चढ जाये एक दिवस नहीतं फासीपर अल्ला ला होये प्यारा ।।३।।

सावकार खासे, व्यापारी खासे जमकर
नेता खासे सरकार खासे ठोकपिठकर
कसेत आमला अन्नदाता नही लगं सरम
दुनिया को पापसे किरसान पर सहसे गधा बनकर ।।४।।

सरकार खोटी सरकारी योजना झुठी, झुठी घोषणा
नही सब्सिडी, नही कर्जमाफी सब हेराफेरी को धंदा
मरसे त मरन देव किरसान ला कोनिला नही फिकर
मारो बायको, बेटा बेटी, मायबाप ना तु भी मर भूखो ।।५।।

***

३७. हो हो, मी सेव उच्च सर्वोच्च पदविधर

सपना दिलमा, जिद मनमा, सवार पागलपन
शिकत-शिकत गई मोरी लम्बी उमर
करेव जीवन को रान, दिवस-रात पढ़-पढ़कर
हो हो, मी सेव उच्च सर्वोच्च पदविधर ।।१।।

जाऊ अज एन कॉलेज, सकारी वनं कॉलेज
फिरू अज एनं शहर, सकारी वनं शहर
थक गयो मी नौकरी साथ, मार चक्कर पर चक्कर
हो हो, मी सेव उच्च सर्वोच्च पदविधर ।।२।।

कोनी की रव्हसे मांग, पार्टटाईम टिचर
कोनी की रव्हसे मांग, कांट्रिबुटरी टिचर
कोनी कसे आनो रोकडा या जाति आरक्षण
हो हो, मी सेव उच्च सर्वोच्च पदविधर ।।३।।

मी घुम-घुम भयो आता पुरो पस्त निरस्त
लोक कसेती, जबं देखो तबं तु चिंताग्रस्त
डीग्री पर डीग्री लेय करेव, खरोच मी मोठी भूल
हो हो, मी सेव उच्च सर्वोच्च पदविधर ।।४।।

***

३८ नौकरी

बाप चार एकर धानारी उनारी को किरसान
बाप खंद खार बेटा फेकं पेंडी, माय गाड पऱ्हा
माय काटं धान बेटा जुप दावन बाप काढं मोडा
गरीबी मा सिकाईन, बेटा करे आमलो उद्धार ॥१॥

भेटेव फल, भयो बेटा बी ए पास
करसे अर्ज रोज धावसे गाव गाव
देसे इंटरव्ह्यू महिना मा दुय-चार
पर नही लगेव चांस भया चार साल ॥२॥

बाप कसे तु कसेस मी फस्ट क्लास
मंग काहे होय रह्या आता असा हाल
बेटा सांगसे दादा आपला नसीब खोटा
जहां वहां मांगसेत सिफारस ना नोटा ॥३॥

दादाजी जानला पुढं पायजे नीची जात
आरक्षण बनी पुढं जानकी सीढी वऱ्या उठाय
चपराशी पाच बाबु दस ना साहेब बीस लाख
आबं चल रही से जहां जाव वहां भाव ॥४॥

आमी पवार रह्या खेती मा खप्या
नाहाय आपलो कोनी नेता मायबाप
आरक्षण मा भी नही एस.टी.एस.सी. आमी
यव आमरो त दुर्भाग्यच आय ॥५॥

***

३९.सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण

सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण
काहे का खुदसिन लड़नो नाहाय सोपो काम ॥

आपलं सब गुण अवगुण को रव्हसे ज्ञान
करनो पड़से रोज इनको बारबार सज्ञान
खुदलाच खुद देनो पड़से ठोस प्रमाण
सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ॥१॥

आपलंपरच आपलोला मारनो पडसे चोट
निर्ममतालकच काढ़नो पड़से आपली खोट
आपलं आंगपरच चलायो जासे धनुषबाण
सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ॥२॥

व्यक्तित्व निर्माण आय सब निर्माण को आधार
काहेका व्यक्तित्वलकच होये निर्माण व्यक्ति ना परिवार
व्यक्ति-व्यक्ति मिलकर होसे समाज, राष्ट्र निर्माण
सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ॥३॥

सर्वप्रथम आपलोच करो व्यक्तित्व निर्माण
दुसरा देखेत तुमला, लगेत करन आपलो निर्माण
समाज सुधार को मुलसे आपलो पहले सुधार
सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ॥४॥

त्यागी तपस्वी परोपकारी नही जबतक मन
का खाक बनाओ तुमी समाज नंदनवन
ठेवो आपला स्वार्थ लोभ मद मत्सर त्याग
सबसे कठीन होसे आपलो व्यक्तित्व निर्माण ॥५॥

***

४०. तरक्की भी होसे एक कहानी

तरक्की की भी होसे एक कहानी
धूंद होसे वोकोपर एकदम दिवानी
चरैवेति चरैवेति पाय नही रूकती
मंजिल से दूर केतरी चिंता नही एकी ।

ना भूख ना तहान संग चले भगवान
खाल्या जमीन ना वोह्या आसमान
डोरा मा आग ना दिमाग मा तुफान
कामयाबी मांगसे मेहनत को घाम ॥

एक दिवस मा ताजमहल नही बन्यो
एक दिवस मा देश आजाद नही भयो
शांति सबुरी को फल होसे सदा मिठो
बस आपलं लड़ाई मा डट्‌यो रहो ॥

कोन करसे निंदा ना कोन तारीफ
कोन आवसे साथ ना कोन परासे दूर
नोको ठेवो भूलकर भी एको हिसाब
जब मिले कामयाबी त एच गरोमा टाकेती हार।

***

४१. पुरूषार्थ

झुंझुरका की सुंदर चांदनी माला
भरे शितल प्रकाश भूमंडल सारा
महक उठे फुलहिन को गंध सुगंध
करे दसो दिशा मदमस्त मनोहर ॥१॥

उगतो सुरज की कोमल किरण
उजर दे जगमग सारो चितवन
हरदय तार करे नवनीत स्पंदन
जीगर मा भरदे नवी नवेली उमंग ॥२॥

छाती करे तेज गति लं श्वसन
फरफड़े खांदा नव उद्योग करन
चल पड्या पाय मंजिल ढुंढन
से उभी विजयश्री हार धरकन ॥३॥

जगाये गर आपलो पुरुषार्थ मानुस
करे मेहनत कड़ी लगन लगाये मन
चारवे उ मानुस कभिभि मिठो फल
आपलो संसार करे हरोभरो नंदनवन ॥४॥

***

४२. काहे करसेव निरर्थक वादविवाद

हर मानुस क डोईमा बामण को वास
डोई आय ज्ञान-विज्ञान विद्या को निवास ।

हर मानुस क छाती मा क्षत्रिय करे राज
छाती आय बल शौर्य धैर्य शक्ति भंडार ।

हर मानुस क पेटमा वैश्य करे काम
पेट आय अनाज पानी भाजी को गोदाम।

हर मानुस शुद्र बन करे मलमुत साफ
करे सफाई रोज-रोज बिना सरम-लाज।

काहे करसेव निरर्थक हरदम वादविवाद
ना कोनी वर्ण उचो ना कोनी से नीचो ।

ना कोनी जात उंची ना कोनी से नीची
करमलक बनसे मानुस जगमा महान ।

का टीका जनेऊवाला नही करत पाप?
का तलवार-छुरीवाला नही करत विनास?
का धंदा-पानीवाला नही होत कभी अनाथ?
का साफ-सफाई करनो होसे महापाप?

मंदिर जायकन नही होय कोनी पुण्यवान
बामन क आशिर्वाद ल नही बनं कोनी धनवान
जो करे श्रम-परिश्रम जीवन मा बहाल
श्री सम्पत्ति सुख शांति आये वोको द्वार ॥

४३. गुरुजी मोला सांगत रव्ह, मानुस को जीवन कहाय..

चौथी मा मी होतो जबं, गुरूजी मोला सांगत रव्ह....
मानुस को जीवन मन्जे नोहे मंडई की दंढ्यार
यव मानुस को जीवन नोको करो फुकट बरबाद
मानुस को जीवन मन्जे कोन्टा क मकडी को जाल ॥१॥

चौथी मा मी होतो जबं, गुरुजी मोला सांगत रव्ह....
पटील को टुरा दिवसभर खासे माल ना कर से उपाद
कोतवाल को टुरा दिवसं जासे इस्कुल ना रात्री अभ्यास
बदली पटील की सरई झोपडी मा ना, कोतवाल की झोपडी लक बंगला ॥२॥

चौथी मा मी होतो जब, गुरुजी मोला सांगत रव्ह....
मानुस की शोभा नाहाय रंगीन कपडा सोनो चांदी मा
विद्या कौशल सदाचार सद्‌विचार आती ओका गहना
काममाच देव जाने जो जीवन रहे वोको सुखी समाधान ॥३॥

चौथी मा मी होतो जबं गुरूजी मोला सांगत रव्ह...
वु देख कसो उभो से खेतक धुरो पर आंबाको झाड
तपन मा देसे छाव ना बारीश मा करसे बचाव
भुखो ला देसे पिक्या पाड़ नही देखं धरम जात ना पात ॥४॥

चौथी मा होतो जबं गुरुजी मोला सांगत रव्ह...
जसो बोवो बीज खेतमा तसी आनो फसल घरमा
बाबुरको झाड ला बोरं लगी का कोनी न सेस देखीस?
जीवन मा जसा करम करो तसा फल चाखों तुमी ॥५॥

****

४४. जीनव नोहे कंचा गोटी को खेल

जीवन नोहे कंचा सागरगोटी को खेल
ऊ आय मानुष ला मानुष बनाओंको मेल
जीवन नोहे फुकट को टाईम पास
ऊ मांगे चरित्र कर्म धर्म की साथ ।।१।।

जीवन आय पहेली, सोडावो त गुथत जाय
जीवनभर हासत सुखदुख झेलत जाव
गरम निंगराहिन ला हासत हासत फूल बनाव
बनो येते सहनशिल का आसू अमृत बन जाय ।।२।।

जीवन आय गंजी पत्ता को एक खेल
चांगला पत्ता मिलनो किस्मत को खेल ।
चाल चलनं कसी, रव्ह से आपलं हाथ
हार ला जीत मा बदले जो, उ मुस्कराय ।।३।।

जीवन क राह मा दुखसुख चलसेत साथसाथ
नही त सुखदुख की कींमत नही होती मालुमात
जीवन मा भेटे रव्हतो सब तं मचे रव्हतो अहंकार
मानुस ला नही आवती कभी देव देवी की याद ।।४।।

***

४५. सांगो जी, कोन चलावसे यव चक्कर

(बायको पुससे आपलो नवराला)
चलत रव्हसे दिवस मंघ रात
फिरत रव्हसे सुर्य मंघ चांद
आवत रव्हसे पुनवा मंघ अमावस
सांगो जी, कोन चलावसे यव चक्कर ।।१।।

आओ जग मा काटो जीवन मंग मरन
लेसे सोडसे सुवास प्राणि जीवन भर
होत रव्हसे हरदय धडकड निरंतर
सांगो जी, कोन चलावसे यव जीवन ।।२।।

रव्हसे भूखी प्यासी माय, टुरूपोटु साथी
रव्हसे प्रेम दिवानी बायको, नवरा साथी
घुरसे याद मा सदा बहिन, भाई साथी
सांगो जी, कोन चलावसे यव अंतर्मन ।।३।।

जासे घर की बेटी रोवत रोवत परायो घर
आवसे परायो घर की बेटी हासत हासत आपलो घर
जुड़ जासेत गाठ बंधन पक्का सात जनम-मरन का
सांगोजी कोन बांधसे यव जीवन बंधन ।।४।।

निभावन रिस्ता लगसे आपलो पण
चलावन गाड़ी जीवन की, लगसे धन
बनन मानुस लगसे सद्‌चरित्र कर्म प्रधान
सांगोजी कोन देसे बुद्धि दिमाग मा भर ।।५।।

***

४६.आपलं हाथ लं आपली तकदीर बनाओ

तुफान आंधी क झुला मा झुलो
लखलख तपन मा फूल बन खिलो
पुर महापुर मा मजालं पोहनो सिखो
आपलं हाथ ल आपली तकदीर लिखो ॥१॥

आपलं हाथं ल वज्रबन पर्वत काटो
रस्ता का नदीनाला पार करो
घाम, पियकन आपली तहान बुझाओ
आपलं हात लं आपली तकदीर बनाओ ॥२॥

रोटी भात पलंगपर धावत नही आवं
मंदिर जत्रा नवस काम नही आवं
आपलं मेहनत पर तुम्ही नाज करो
आपलं हाथ लं आपली तकदीर बनाओ ॥३॥

नही कोणी यन जग मा रव्हन दे फुकट
नही कोणी यन जग मा खान दे फुकट
नही कोणी यन जग मा रिस्ता निभावं फुकट
आपलं हाथ लं आपली तकदीर बनाओ ॥४॥

पुरखों की जमीन जायजाद पुरे कबलक
माय बाप की छत्रसाया रहे डोई पर कबलक
भीख लं पोट पानी चले धाये कब लक
आपलं हात लं आपली तकदीर बनाओ ।

***

४७. आपलाच साथी

असा लगसेत आपला साथी, अनजाना लोक
भूल गया सब साथ जुनो, बनगया अनजाना लोक
दिल भयो जर-जर याद मा उनकी, भूल्या बिसऱ्या लोक
भेटसेत भूलथापलं गरो मिलसेत बगुला भगत दोस्त ॥१॥

जिनको साथ चल्या संग, आता स्वार्थ प्रथम
नावकमाईन दोस्तीलं, आता कसेत तु कौन
बन्या मालदार मोठो घर गाडी को से तोरा
कव्हत रहेत यव कोन घर आयो भीख मंगा ॥२॥

मोरो काम त्याग तडप को लोहा होतो मानत जे लाक
आयासेत आता आरसा धरकर मोलाच देखावसेत लोक
मोरो बिना नही बिह्या ना स्कुल कॉलेज भर्ती होत होतो उनको
अक्कल बाटसेत आता मोला देखावसेत आपलो रंग बेढंग ॥३॥

मी नं जिनपर करेव भरोसा, उननच मोला लुटीन
हमराही बनकर आया होता, मौका फरस्ती ये लोक
मी भी हासत हाथ बढायकन, उनला उनपर छोड देयेव
आहेत मोला से मालुम, जब पहार पड़े उनकं सिरपर ॥४॥

***

४८. मानुस मुकदर्शी रव्हसे

आदर्श बनसेत तुटसेत
बिचार मिलसेत तुटसेत
श्रद्धा आवसे अंधश्रद्धा बनसे
सुरीति आवसे कुरीति बनसे
मानुस मुकदर्शी रव्हसे ॥१॥

परिवार बनसेत तुटसेत
भाई भेटसेत तुटं सेत
नाता बनसेत अना सुटसेत
सद्‌बुद्धि जासे दुर्बुद्धि आवसे
मानुस मुकदर्शी रव्हसे ॥२॥

सगा सोयरा बनसेत ना तुटसेत
नवा रिस्ता बनसेत ना तुटसेत
लालच आवसे ना प्रेम तुटसे
सुख ना दुख आवसेत जासेत
मानुस मुकदर्शी रव्हसे ॥३॥

कधी मन मीठो कधी मन खट्टो
कधी हासनो, कधी रोवनो
कधी गावनो कधी नाचनो
मानुस को यव जीवन से
मानुस मुकदर्शी रव्हसे ॥४॥

***

४९. जीवन मा बहाओ अमृत धारा

नही पता मानुसला जनम होये कहां
देश शहर गांव को नही रव्ह ठिकाना
न धरम ना जात ना पात को पता
मंग काहे करे मानुस बेकार को गुमान ॥१॥

नोको करो येतो धनदौलत पर गरुर
नोको रहो येतो सत्ता मा मगरुर
अमीरी गरीबी दुय दिवस की मेहमान
कर लो आपलं खरी औकात की पहचान ॥२॥

जिंदगी आय जसी बरसाद को पानी
परासे त पता नही, बहे नाला, नदी
जिंदगी आय जसी बाग की बहार
नही कोनी रव्ह वहां लेत सुंगत दिवस रात ॥३॥

तु आस एक प्रकृति की सुंदर रचना
आत्मा से अमर जसो निसर्ग परमात्मा
हाथ मा से आपलो दुखी दर्दी को कल्यान
बस जाहे यवच तोरो मरन क साथ ॥४॥

गिनती नोको करूस आपली जमीन जायजाद
भयेव खुब आबवरी आपलं औलाद को लाड़
बस दिल से दिल मिलाओ बहाओ प्रेम की धारा
हासो ना हसाओ, जीवन मा बहाओ अमृत धारा ॥५॥

***

५०. मानुस न सोड़ीस मानुसकी त वोला का कहे?

जींदगी तेली को घानो नही, नही कोल्हु को चक्कर
नही मानुस बैल क वानी, कोल्हू को नौकर
बइल फिरसे गरगर डोरा पर पट्टी बांधकर
मानुस ला पडसे रव्हनो चौकस डोरा उघड़कर ।

तेली को काम तिळ टाकनो ना तेल काढनो
बइल को काम खानो ना कौरी करनो
दुही क जीवन को मकसद से पेट भरनो
मानुस भी करे असोच त वोला का कहे?

डुक्कर जहां दिसे वहां सेन खासे पेटभर
भ्रष्टाचारी भी जहां दिसे पैसा खिसा मा भर
डुक्कर बच्चा जनसे डजन, यव प्रापर्टी लेसे
मानुस भी करे असोच त वोला का कहे?

मधुमासी बनावसे शहद दिवस ना रात
शहद पर पालसे बच्चा ना बाटसे सबला
मानुस गर खाये खुब ना मारे दुसरहिन ला लात
मानुस नं सोड़ीस मानुसकी त वोला का कहे?

मानुस को जीवन आय अथांग समुंदर
खुद स्थितप्रज्ञ गंभीर रहो शांत निरंतर
समावो सब धारा बनो खुद खारा सागर
सभ्यता संस्कृति सोड़ीस मानुसनं त वोला का कहे?

***

५१. नहानपण

सागर से चारो दिशा अफाट मोठो
भरेव रव्हसे अथांग खारो पानीलं
पर नही कर सकं हिम्मत पानी पिवन
नही कोनी तहान आपली बुझाय सकं ॥१॥

रेगिस्तान से चारी दिशा मा फैलेव
जितं उतं देखो रेती का ढिग ना पहाड़
पर पानी रव्हसे सदा ठनठन गोपाल
देसे अकाल मृत्यु ला सदा आमंत्रण ॥२॥

हिमालय से सबसे उचो पहाड़ राजा
वऱ्या से भरेव शिखर पुरो बरफलं
से प्राणवायु को वहां भलो अकाल
होसे जीवन जगनो मोठोच खराब ॥३॥

नाग सम्हाले पृथ्वी को सारो भार
उ से बनेव शिवको गरो को हार
बिखरे मोती उजारो तेजं चौफेर
पर लेसे जहर उगल जीवजंतु का प्राण ॥४॥

खासे हत्ती अंकुश को मार,
पर खासे मुंगी दिनरात मिठास
मधुमासी को आय शहदच जीवन
मुहुन से नहानपण सबमा उत्तम ॥५॥

***

५२ भौतिक सुख की धाव

जो देखो वु पैसासाठी मरमर करसे
पैसा मंघऽ घोडावानी सैराबैरा धावसे
कावरा बावरा पगला जोगड़ा बन जासे
आपुनच आपलो पर रयरय वानावसे ।।१।।

पैसा से सोनो चांदी से घर मोठो महाल से
महाराजा सोफा से पलंग पर फोम गद्दा से
कुलर से एसी से कुलींग हिटिंग सिस्टिम से
आपुनच आपलो ला स्वर्ग को देव मानसे ।।२।।

मी, बायको टुरा टुरी येतोच वोको संसार से
कुटुम्ब ला खिलाओ! लिखाओ! यवच काम से
सब साथी शौक दारू पानी को इंतजाम से
आपलो आपलाहिन साथीच जीवन करम से ।।३।।

मायबाप भाईबंध रिस्तानाता खोटो नाटो से
दुर्जनहिनला फुकट मा केरा कोन बाटसे ।
मंदिर मा देवला चढाये सौकी नोट दक्षिना
भिकारी ला फुटी कौडी देनो फुकट से ।।४।।

बायको मांग पर मांग, हररोज पुढं ठेवसे
टुरूपोटू को जेबखर्च नही काही पेलसे
जिनको साथी सोडीस नातागोता सप्पा
उननच आता मायबाप सिन तोडीन नातो ।।५।।

टुरा टुरीला होटल बार को नांद लगी से
टुरा लव इन रिलेशनशीप मा मस्त से
टुरी मसगुल फ्रेंडसीपमा, भई अंधरी से
देखो पैसा मा कसो अंधरा से ।।६।।
***

५३. आरक्षण

पवार बन्या गरीब खेती न करिस बेहाल
भयो जीवन बडो दीन हीन बेबस लाचार
जर जर भया सुखा बाढ की खाय मार
जमीन जायजाद ल भया ठन ठन गोपाल ।।१।।

नाहाय शिक्षा कला कौशल को काही ग्यान
मुस्कील मा पड्यो रोटी कपरा ना मकान
नोहोतो खान ला दाना वय बन्या मास्तर
आमरा टूरू पोटू बन गया कोरा गवार निपट्टर ।।२।।

लिखे पढे नोकरी धंदा बिगर नही उद्धार
लेव शिक्षण नौकरी मा आरक्षण को आधार
आरक्षण से आमरो संवैधानिक अधिकार
जहां जहां पडे जरूरत करो बेधडक इस्तमाल ।।३।।

लोक आजकल आरक्षण लं चमक्या जगभर
नोकरी राजनीति मा भया सबसे अव्वल
लेव भाई बाई सब आरक्षण को लाभच लाभ
करो जीवन आपलो विकसित सुख समृद्धिवान ।।४।।

***

५४. करो बेधडक जमकर भ्रष्टाचार

करो बेधडक जमकर भ्रष्टाचार
बन गयो जग मा उ शिष्टाचार
हर कोनी करे हाथजोड नमस्कार
जहां वहां होसे उनकी जयजयकार ।।१।।

करो बेधडक जमकर भ्रष्टाचार
बनाओ आपलो घर मोठे चमकदार
ठेवो कुतरा भितर दरबान बाहेर
बन जाओ शहर मा इज्जतदार ।।२।।

करो बेधडक जमकर भ्रष्टाचार
बंगला फ्लॅट फार्म प्लॉट की भरमार
फिरो दुयचार गाडीयोंपर दिवस रात
जीवन मा आनो रंगीन बहार ।।३।।

स्कुल कॉलेज खोलो दुय-चार
एक खोलो बार ना दुसरो रिक्रियेशन हाल
होय जाव नेता मोठो, करो राज
कर लेव दुनिया मुठ्ठी मा यार ।।४।।

***

५५. हाँ हाँ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात

नही देयेव धोका दगा मी कोनिला
नही करेव खोटो नाटो मी काम
गरिबी भली आपली, से समाधान
हॉ हॉ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात ।।१।।

नही करेव भ्रष्टाचार मी कभी
नही लुटेव कमिशन मी कभी
आपलं पगारच से पुरो चलसे घर
हॉ हॉ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात ।।२।।

नही करेव व्यभिचार अत्याचार पाप
नही करेव गैर व्यवहार गैर आचार
नही दुष्मनी कोनीकी करेव सबला प्यार
हॉ हॉ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात ।।३।।

नही मोठो घर मोरो नही बगिचा
नही लम्बी गाड़ी नही घोड़ा घाडा
हाथपाय सेत सलामत गा पक्का मोरा
हॉ हॉ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात ।।४।।

सदा बरससे प्रेम की पावन जलधारा
मान पान सम्मान को से रिस्ता नाता
सुख शांति समाधान भरेव मोरो जीवन
हॉ हॉ नही जमायेव मी मोठो धन जवारात ।।५।।

***

५६.सुट्टी की मज्या

उनारो क सुट्टी का वै दिवस मोठा
आवसेत याद मोला बारम्बार कसा
जात होता अमराई पार का आम्बा खानला
खेलन कुदन की आवं खुप मज्या ।।१।।

होती बाहेर चिलचिलाती तपन की आग
पर गुडऱ्या आम्बा खात्या बहे थंडी हवा।
आवं झोका हवाको, परत ना पार का आम्बा
सुटत होता मुंडा घोरावानी, उनला बेचनला ।।२।।

खेलत होता झाड़ खाल्ल्या बिट्टी दंडा
मारो दांडु भगावो बिट्टी, दम भरं गन देता देता
तु खोटो मी खरो उ रोनट्या, होत होतो दंगा
झगरा सोरन आवं मामा, होतो रोज को फंदा ।।३।।

आम्बा को रस ना घिवारी की आवं खुब मज्या
कच्चो आम्बा चटनी गोरम्बा रायतो खाओ साथ साथ
कुसुम्ब बुल्ल्या आटेल पुरी ना हलवा लाडु खीर
दार बरी ना कोहरो की श्याक आवसे अज भी याद ।।४।।

होता जात मामाजी घरं, होत होतो पाहुनचार
राती कोंबरी, दिवसं मसरी पर रव्ह वार
भाश्या भाश्या करत सब खुब करत गुणगाण
लगत पाय आमरा ना कव्हत 'देव दे आशिर्वाद' ।।५।।

***

५७.वास्तुशास्त्र न करिस नास

वास्तुशास्त्र की धूंद मा भाऊनं करिस नहालांद ला मोठांग
मोठांग क बिहिरला करिस बुझाय नाहानांग भई आता खुदाय
रांधनखोली गई उत्तर-पुरब ल दक्षिण-पश्चिम दिशा
अना देवघर आयेव पश्चिम-दक्षिण लं उत्तर-पुरब दिशा ।।१।।

जेवन की छपरी बदल गई बर्तन भांडा को गोटा करिन फेक बाहार
बैलहिन की पानी डोंगी भी बदल गई, भस्यासुर ला फुट्या पाय
पंडित न धरिस दक्षिणा दस हजार ना भयो फरार आपलो गाव
ठेकेदार न करिस कमाई दुय लाख भया वोका गाल लाल लाल ।।२।।

'बईल मरे नहीं त, सुखा पड़े' असी भई गत यन साल
नसिबच आपला खोटां त का करे हरेकृष्ण गोपाल
बेटा भयो मॅट्रिक फेल बेटी को तुटेव बिह्या पडेव पहाड
सबका चेहरा मुरझाया घरदार धावसे आता खानं ।।३।।

बुरगी माय कव्हत थक गई नही कोनी न देईस ध्यान कान
जुनच घर न देईस सुख समरुदि आमरा पुरखा होता धनवान
पंडित-मंडित क चक्कर मा भाऊ न करिस घर को बेडा पार
गयी कमाई हाथ की, खेती से ठनठन पार, भया बुरा हाल ।।४।।

सांगो तुमिच दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर को दर्शन का होसे दाड?
सांगो तुमिच दक्षिण दिशा चली ज्या ट्रेन होसे का ओको एक्सीडेंट ?
साग़ो तुमिच दक्षिण मुखी दफ्तर ल होसे का काही साहेब सस्पेंड?
बेटा आय यो सब लबाडी खेल, दुर्बल मन को अंधविश्वास ।।५।।

***

५८. संगठन शक्ति एकता मा

'संगठन बिना नही उद्धार' से मालुम सबला
मंग काहे भीड इतं उतं, अलग अलग मैदान मा
जाति-प्रेम समाज-प्रेम को, काहे यव धंदा दोगला
मी उत्तर, तु दक्षिण, आमी पुरब, तुमी पश्चिम कायला ॥१॥

आपलं अहम को त्याग करो कोनी नही मोठो लहान
सबको खून से एक, मंग काहे एकमेकसीन द्वेष भाव
सबको मकसद एकसे, करो समाज को विकास उद्धार
नेतागिरी की महत्त्वाकांक्षा त्यागो, बंद करो आलाप ॥२॥

येव मोरो संगठन वु तोरो संगठन, करसेव हमेशा हेवा
मराठा गुजराती मारवाडी देखो, कसी करसेत समाज सेवा
सबको लक्ष्य एक, जुटाओ संसाधन, उत्थान करो समाज
मंग काहे बोलनो ना करनो मा फरक, सब चलो साथ साथ ॥३॥

आत्म अनुशासन बढ़ाओ, त्यागो आपसी टकराव
समर्पित रहो सिद्धांत पर, कलह देव ठुकराव दूर भगाव
कार्यनीति बनाओ असी कि प्रगति पर समाज चले पुढं
होय भवन लक समाज को मंगल, सब साथी द्वार खुला ॥४॥

जन-जन क हृदय मा समाज-प्रेम, विकास ज्योति जले
जन-जन क हृदय मा समाज सेवा को अखंड दीप जले
भाईचारा, सद्भाव सौजन्य से संगठन की जान ना प्राण
बिना दृढ़संकल्प, कर्मठता, नही संघशक्ति को आगाज ॥५॥

गया सब समाज पुढं, विकाश शिखर पर करे निवास
देखो पवार समाज की दशा, से आब भी धुल खात
शिक्षा नौकरी उद्योग व्यवसाय खेती, सब मा बेहाल
देखाओ संगठन एकता शक्ति, करो समाज नैनिहाल ॥६॥

***

५९. आमी आजन सब एक

क्षत्रिय पवार आमी, नही कोनीसीन कम
खोलके देखो इतिहास आमरो बात करो मंग
सांगो सम्राट विक्रमादित्य होतो का नही पवार
विक्रम संवत सिहासन बत्तीसी बेताल पच्चिसी करो याद ॥१॥

ना भूलो राजाभोज ला भोजशाळा वाग्देवी ला जोडो हाथ
८४ पदवीधर, ८४ सामंत स्वामी चक्रवर्ती राजाभोज पवार
याद करो जगदेव गोंडवाना पर गढचांदुरलक करिस राज
सिस चढाय चामुण्डा ना कंकाली, परमदानवीर कहलाय ॥२॥

दौडी पवार सेना धार लक इतं उतं गोंडवाना कई बार
नगरधन भांदक भोरगढ चांदा गडचांदुर ल करिन राज
भयो धार राज पतन भई सेना वापस मालवा अना धार
राजस्थान पंजाब हरियाना गुजरात का बन्या बीर सरदार ॥३॥

क्षत्रिय पवार आमी बख्त बुलंद संग आया यन प्रदेश
कन्या औरंगजेब ला उरवाड, गोंडराजा का बन्या विशेष
बळद महागांव की जमीदारी, गाव की पटीली भेटी भेंट
वैनगंगा वर्धा नर्मदा घाटी का बन्या उन्नत किरसान ॥४॥

नोको करो भेदभाव, ठाको दूर दूर आमी आजन सब एक
आमी आजन धार का वीर क्षत्रिय पवार ॥

***

६०. राजा भोज

तिथि माघ बसंत पंचमी १०३७ ला जन्मेव भोज राजकुमार
आनंदी भयेव पिता सिंधुल माता सावित्री ना अख्खो राजपरिवार
बालक की विरता सद्गुण, सद्चरित्र करे सब लोक गुणगान
'५७ साल ७ महिना ३ दिवस करे राज' गरजेव महाराज ।।१।।

भविष्य आयकिस काका मुंजदेवन ना भयेव बेफाम
भोजवध को रचिस कट पर भयेव उ ओकोमा नाकाम
भोज भयेव आखिर युवराज बनेव राजासिहांसन विराज
भाई हिस्सा ल भयव तंग, उजैन राजधानी बदलिस धार ।।२।।

इंद्ररथ गांगेय भीम चोल चव्हान चंदेल ला करिस परास्त
कल्याण कोकण लाट सरिखा कई देश देईस मालवा मा मिलवाय
मोहम्मद गजनवी न जबं सुनिस भोज हुंकार, करिस भागमभाग
मालवा भयेव अखंड देश भोज बनेव चक्रवर्ती महाराजा सम्राट ।।३।।

साहित्य, संस्कृति, समृद्धि जनकल्यानकी मालवा बनी पहचान
८४ महाल, ८४ मंदिर, ८४ चौराहा, ८४ बगिचा धार को श्रृंगार
भोजशाला लाटमहल भोजपाल नगरी भोजताल करिस निर्माण
८४ राजा गुलाम, ८४ पदविधर, ८४ ग्रंथोंको बनेव रचनाकार ।।४।।

लाकोक्ति भई प्रसिद्ध 'कहा राजाभोज और कहां गंगु मंगु'
केदारनाथ रामेश्वर सोमनाथ भोजनाथ को आय रचनाकार
१४०० महापंडित महाकवि कालिदास रहे भरेव दरबार
असो होतो महावीर महाकवी महादानी आमरो राजाभोज पवार ।।५।।

***

कथा - १

दूरलक डोंगर साजसे

कभी कभी मानुस आपलो जीवनलक निराश होय जासे। पर दुसरा लोक तुमला देख तुमरो सारखीच जिंदगी जगन को सपना देखसेत।

एक दिवस आंगण मा उभो टुरा उड़तो हवाई जहाज देखकन हवाई जहाज पर बसकन उड़न को सपना देखसे। पर वोनच बेरा हवाई जहाज को चालक (पायलट) आंगन मा उभो वोनो टुराला देख आपलो टुरा की याद करसे ना आपलो घर लवकरच वापस पोहुचन को सपना देखसे। याच जिंदगी आय। जो तुमरो जवळ से ओको भरपुर मजा लेव ना सुखी रहो। आनंद लेव। अगर धनदौलत रूपया पैसा सुखी होनको आधार रव्हतो त धनवान लोक हमेशा नाचता हासता दिस्या रव्हता। पर वय भी दुख चिंता मा डुब्या रव्हसेत। दुसरोकन नजर दौड़ावो त का गांव, शहर मा गरीब का टुरूपोटु भी खेलत, नाचत, गावत, हासत दिससेत।

अगर सत्ता ना शक्तिलक मानुस जीवन मा खुशच खुश रव्हतो त नेता चिंता मा डुब्या, लोकहिन की गारी खात अना सुरक्षा सिपाईहिन को घेरा मा नही रव्हता। पर आमी तुमी सामान्य लोक बिना कोनी को भेव, धाक, चिंता क शांतिलक सुख चैन क जपलक सोवसेजन। आमला सुरक्षा घेरा की जरूरत नही पड़ं!

अगर सुंदरता, सुंदर घर, मोठो घर, गाड़ी ना ऐश्वर्य ना मोठो नाव, प्रसिद्धीलक रिस्ता पक्का घट्ट होता, सब सुखी रव्हता त उनमा सोरचिठ्ठी, दहेज, हुंडा, आत्महत्या, आत्मदाह, खून-खराबा, बटवारा, झगरा-टंटा भया नही रव्हता।

सांगन को तात्पर्य मनजे आपलं जिंदगी मा सबच सुखी, आनंदित, अमन-चमन लक मजा मार सिकसेत। बस मन मा उल्हास पायजे। कोनी को हेवाटेवा, इर्ष्या, बरोबरी बदला बगैरे की आपली आदत सोड़े पायजे ना आपलं घर-गृहस्थि मा काही कमी नाहाय असो मन ठेये पायजे। खुश रवनो आपलं मनस्थिति पर निर्भर से।

सबसिन मेल-मुलाकात, सदाचार, परोपकार, नम्रता ना प्रेमळपणा सुख का आधार आती। मीच मोठो, मीच शाहनो, मीच धनी, मीच गुणवान, मीच

इज्जतदार, मीच कर्तबगार को कोरो ढोंगी गर्व ना नशा आंग मा आने नही पायजे। दुसरों को मान-सम्मान करे पायजे। दुसरों को मन दुखायकन, दुसरोला नीचो दिखायकन, दुसरोला त्रास देयकन कोनी सुखी आनंदी जीवन मा होय नही सकं।

आपलो गुस्सा जो पिय सकसे, ओला बाद मा पसतावा की बारी नही आवं। याच जबान गोड़ ना याच कडु से। मुहुन सोच समजकन बोले पायजे। ए मानुसकी का गुण जेनं आपलो जीवन मा जपीस ओला आपलो जीवन मा सुख, समाधान, आनंद, शांति, प्रेम, साथ, सम्मान सब भेटसे। आपलो जीवन मा आनंद भरनो आपलो हाथ मा से।

***

कथा - २
आंतरिक प्रेम

मी एक दिवस बस की रस्ता देखत बस स्टँड पर उभो होतो। जवळच बेंच पर कोनी बुजुर्ग काका ना काकी बस्या होता। चष्मा साफ करत काका काकुला कसे - अवो आपलो जमानों मा मोबाईल नोहोतो पर तु बरोबर पांच बजे झुंझुरका उठत होतीस।

काकु न जवाब देईस - हो मोबाईल नोहोतो पर घर को कोंबड़ा न जोर की बाग देईस का मी उठन की ना तांब्या को पानी दुय गिलास मा भरकन एक गिलास तुमला पिवन देत होती ना दुसरी गिलास को पानी मी पिवत होती। तबं तुमी कव्हनका, तोरो बरोबर बिनचुक टाईम टेबल रव्हसे!

काका न पुढ़ कहीस - तीस - पसतीस साल को आमरो संसार मा मी जबं भी बाहेरलक काम करखन घर आऊ त तु भरेव पानी को गिलास लेयकन दरवाजो पर उभी रव्हनकीस। तोला कसो मालुम होत होतो, सांग बरा! काकी न जवाब देईस - तुमरो फाटक खोलन की आवाज ना चलनकी आवाज परलक मी बरोबर समजजात होती का तुम्ही घरं आयात मुहुन।

काका पुढ़ कसे - मी अजवरी नही समज सकेव कि मोरो आवडी निवडी को एक हफ्ता एक ना दुसरो हफ्ता दुसरो मिठो खान को कसो समज जासे - तु बरोबर एक हफ्ता बुल्या भज्या त दुसरो हफ्ता आटेल चाकोली बनावसेस। काकु जवाब देसे-देव जाने।

तुरतच काकी बिचारसे काकाला - ना तुमला याद से गये साल मी मायघर गई होती ना बिमार पड़ गई होती। तबं मोला तुमरी याद बारबार आवत होती। कोनला मालुम तुमला कसो मालुम भयेव त तुमी दुसरच दिवस मोरो खाट जवल हाजिर भयात। का तुमला कोनी न बातमी देई होतीस? काका कसे - नही मोरो डोरा की पापनी एकदम फडफडाई त मी धावत आयेव। काकी कसे - तसोच एक दिवस मोरो हाथ सयपाक करता जर गयो होतो त तुमी तुरत आफिस सोड़कन धावत-धावत घरं आयात ना मोरो हाल देख पानी मा ओलो होत-होत दुकान लक बरनाल आन्यात ना मोरो हाथ ला लगाय देया होतात। यव कसो जी होत रहे, असो कसो आपुन एक दुसरो का सुख दुख समज जासेजन?

काका न डोरा मिचकावत समजावत सांगीस - जबं आपलो बिह्या भयो तबं

मी ना तु संग संग अग्नि का सात फेरा लेया होता तबं आपली दुही की आत्मा आग मा पिघलकन एक भय गई!

काकी पुढं कसे - जरी आपलो संग टुरा ना बोहू रव्हसेत, कोनीला बोलन की फुरसत नही रव्ह। सब का सब मोबाईल मा खप्या रव्हसेती। उनला नोकरी ना होटल की हाऊस, आपलं घरं दुय बुजुर्ग भी सेत एकी काही पर्वा नही रव्ह। काका समजावत कसे - जान देगा, आपुन आता व्हायब्रेट मोड़पर सेजन ना आपलं ब्याटरी की भी एकच लाईन बची से। कबं डिस्चार्ज होये पता नही। काकी कसे - बेस भयव आपलो जमानो मा मोबाईल नोहोतो, नही त हरबार चार्जींग़ करनो परतो!

***

कथा - ३

घर का बुजुर्ग : आऊट डेटेड

घर कं बुजुर्गहिन को मान, मर्यादा, धाक, ना शिस्त आता नही रहेव। पहले को जमानो मा घर क देवघर क देवहिन क बाद उनकोच मान वंदना होत रव्ह। उनपर निष्ठा, आस्था, मान ना भेव होतो। कोणतही काम की सुरुवात उनको सल्लालक होत होती। उनको अनुभव काम मा आवं अना काम कभी फेल होत नोहोतो। आता समय बदल गयो, कमाईदार घर का शाहाना भया। कसेत बुरगा अना जवानहिन मा खुप 'जनरेशन गॅप' भय गई से। जमानो तेजी ल बदल गयो ना तुमरो ज्ञान, अनुभव सब 'आऊट डेटेड' भय गयेव!

पहले घर का बुजुर्ग झुंझुरका सोयकन उठत ना सबला जगावत। सकारी देव ना सूर्यदेव ला हाथ जोड़न पासून त दिवस बुड़ता की आरती वरी शिस्तबद्ध जीवनचर्या चलावत। घर मा कसो बसनो-उठनो, बोलनो, चालनो, मान-मर्यादा ठेवनो, एक दुसरो की आयकनो, काम करनो ना एक दुसरो की पाठराखनी करनो बगैरे सांगत रव्हत। एक दुसरो ला सम्हाल लेत होता। एकाद मानुस हीन वा क्रियाहीन भी रहेव त कोनीला जानवत नोहोतो। झाकी मुठ सव्वा लाख की रव्ह। कोनी बाहेरवालो की घर पर तेढी नजरलक देखन की हिम्मत होत नोहोती।

आता त सबच बिगड़ गयो। कोनी को मान नही ना पान नही। एक दुसरो को पोळ नही जमं। सब स्वयंभू शाहाना भय गया। कोनिला कोनिको भेव नही । ना घरका बुजुर्ग की त झाड़पाला की गत भय गई।

जेनं झाड़ला फल फुल आवनो बंद भयो मुहुन वु झाड़ बेकार नही होय, कमसे कम वु सावोली त देसे! वोको सावोली खाल्या सब तपनलक आसरा त लेय सकं सेत! बुजुर्ग घर का झगड़ा घरमाच सोड़ावसेत। कोनीला अंदर, का खिचरी पकसे कानोकान पता नही चलं। दुसरहीनकी घरमा लुड़बुड करन की हिम्मत नही होय। माय खेतं गई वा कोनी कामलक बाहेर गयी त वोका टुरा भूका नही रव्हत ना रोवत नही सोवत । घर क बुजुर्गहिन को टुरूपोटुहिन ला मोठो आधार रव्ह।

पर आजकल कं जवान लोकहिन ला कोन सांगे? आमला पिक्या सुख्या पान समझकर दूर सारंसेत ना एक मिठो बोल भी महांग होय जासे। खरोच जमानो बदल गयो । आता आमी आऊट डेटेड भय गया !!

***

कथा - ४

आमरो राजा भोज

राजा भोज को जनम बसंत पंचमी संवत १०३७ (ई.स.९८०) ला उज्जैन को राजा सिंधुलराज ना माता सावित्रीदेवी को राज परिवार मा भयोव।

भोज सब शस्त्र ना शास्त्र विद्या मा निपुन होतो। चरित्रवान, गुणवान, शूरवीर भोज को दसमी मार्गशीर्ष संवत १०५६ (ई.स.९०००) ला राज्याभिषेक भयेव ना उ मालवा देश को राजा बनेय। परिजन का बाटाहिस्सा भय्या। काका मुंज को बेटाहिन ला उज्ञैन ना उत्तर मालवा को राज्य भेटेव। आता भोज की राजधानी धार बनी ।

भोज न राजकारभार, सम्हालताच रोहक ला प्रधानमंत्री, बुद्धिसागर ला गृहमंत्री, कुलचक्र ना सुरादित्य ला सेनापति, चंद्रशेखर दीक्षित ला राजपुरोहित ना पंडीत छित्रप ला 'कालीदास' की उपाधी देयकन मुख्य सलाहकार बनाईस। वोको महारानी को नाव लिलावती होतो। वा बोहूत विद्वान होती।

राजा भोज न मालवा राज्य विस्तार को तेज अभियान चलाईस ना अन्य देश का राज्य चेदीश्वर, इंद्ररथ, भीम, तोग्गल, चालुक्य, कर्णाट, लाट, तुरक, गांगेयदेव ला लडाई मा हरायकन मालव राज्य ला विशाल साम्राज्य मा बदलीस । ओको साम्राज्य उत्तर मा हिमालय, दक्षिण मा केरल, पूर्व मा द्वारका ना पश्चिम मा बंगाल वरी फैलेव होतो। वनं आपलं जीवन मा करीबन १०० लड़ाई लडीस ना ८४ राजाहिनला मांगलिक बनाईस। साम्राज्य बनेपर वोको सार्वभौम चक्रवर्ती राजा मुहुन विजया दशमी संवत १०७८ (१०२१ ई.स.) ला पदारोहन भयेव। भोज न अफगानिस्थान को राजा महमुद गजनबी न सोमनाथ मंदिर ला तोड़फोड कर हिरा जवारात सोनो चांदी लुटी होतिस पर भोज न सेना पठायकन भारत सीमा को बाहेर भगाय देयी होतीस। राजा भोज सम्राट चंद्रगुप्त सरिखो वीर, सम्राट विक्रमादित्य सरिखो, विद्वान, धार्मिक, दानी अना सम्राट अशोक सरिखो सदाचारी, लोक कल्याणकारी राजा होतो। वोनं रामराज्य की स्थापना करी होतीस । वोको राजकाल मा आपलं देश ला 'सोनो की चिड़िया' कव्हत होता।

भोज विद्वान महाकवी होतो. वु सब राज्यशास्त्र, ३६ युद्धशास्त्र, ७२ कला,

ज्ञान-विज्ञान शास्त्राहिन मा पारंगत होतो। वोनं ८४ ग्रंथ लिखी सेस। युक्तिकल्पतरू, समरांगणसूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगार प्रकाश, श्रृंगार मंजरी कथा, चंपुरामायण जगप्रसिद्ध सेत। वोको राजधानी मा १४०० महान विद्वान का आश्रम होता। राजदरबार मा महाकवी कालीदास ना ५०० विद्वान रव्हत।

भोज न धार मा 'भोजशाला' विश्वविद्यालय की स्थापना करी होतीस। भोज द्वारा निर्मित धार मा धारागिरी किला, भोजशाला, लाट महल, कालिका मंदिर, ना भोपाल मा भोजताल तलाव ना भोजनाथ शिव मंदिर स्मृतिचिन्ह मुहुन अज भी उभा सेत।

भोज भगवान शिव, देवी काली अना वाग्देवी को परम भक्त होतो। वोनं ८४ मंदिर बनावाई होतीस । भोज न सोमनाथ, रामेश्वरम्, केदारनाथ अना कई मंदिरोंको जिर्णोधार करी होतिस। वोला ८४ सम्माज जनक पदवि देयी गई होती। वोनं ८४ महाल बनाई होतीस। वोकं राज मा प्रजा सम्पन्न सुखी होती। ओको महानता क कारण 'कहां राजाभोज ना कहां गांगेय तैलप' कहावत प्रसिद्ध भय गई ।

भोज की मृत्यु तेरस आषाढ, संवत १११२ (१०५५ ई.स.) ला भई। आमरो पवार चक्रवर्ती राजा भोज न ई.स. १००० पासुन १०५५ वरी ५५ साल, ७ महिना, ३ दिवसवोरी राज करिस ना अजरामर इतिहास रच देईस।

***

कथा - ५

झाड़ीपट्टी को राजा जगदेव पंवार

(जन्म : १०४५ ई. चैत्र चतुर्दशी ११०२ स.) (मृत्यु ११३० ई.)

पवार जात मा परमार वंश मा जगदेव पवार नावको सुप्रसिद्ध राजा भयेव । वु धाराधिश राजा उदयादित्य को बेटा ना चक्रवर्ती राजा भोज को पुतन्या/भतिजा आय। वु खुब खुबसुरत, गुणवान ना महायोद्धा होतो। वोको १० साल की उम्मर मा टोंकटोडा को राजा राजसिंग की लावन्यवती ना वीरता निपुन बेटी वीरमती संग बिह्या भयो होतो। धारको राजगादी पर वोको मोठो भाऊ लक्ष्मीवर्मन ना बादमा नरवर्मन को हक होतो मुहुन जगदेव धार सोड़ पाटन (गुजरात) को राजा सिद्धराज कन सेना मा नोकरीसाठी गयेव। वीरमती ला धोकोलक एक कुटन न आपलो घर लेजायकन कमरा मा बंद करिस ना कोतवाल को टुराला वोनोच कमरा मा ढकेल देईस। वीरमती न आपलो खंजरलक वोका तुकड़ा कर देईस। जबं राजा सिद्धराज ला या घटना मालुम पड़ी तबं वु धावत-धावत वहां गयो ना बाहेरलकच वीरमती ला पत्ता बिचारिस। तबं वीरमती न कहिस -

'बापजी पीहर तो नगर टोड़े छै। राजा राजरी धीव छूं, बीज कुंवररी बहिन छूं, सासरो धार नगरो धनी, जाति पंवार, राजा उदयादितरै लोहड़ा बेतारी अंतेउर छूं और पाछड़ी सगड़ी बात कही।'

अर्थात - 'पिताजी नगर टोड़े मा मोरो मायका से, राजा राज की बेटी आव। कुँवर बीज की बहिन आव। मोरो सासुरवास धार नगरी को स्वामी को यहां से। जाति पंवार, राजा उदयादित्य क नाहान बेटा की बायको आव।' अना वोनो इतं उतं की सारी घटना सांगिस।' राजा न वोला बेटी मानकर महाल लेगईस, जगदेवला बुलाईस ना आपलो तिसरो बेटा को मान देईस। रासमाला काव्य मा जगदेव को १२ हत्ति को बराबर बलवान ना सिंह ला उभो चिरनोवालो सुरवीर मुहुन गुणगान करि गई से।

आपलो स्वामी सिद्धराज ला लम्बी उमर क लखलाभ साथी आपलो ना अपलं दुही टुराहिनकी डोई काटकन चामुण्डा देवीला चढाई होतीस ना मंग देवी न प्रसन्न होयकन उनकी डोई जोडिस ना सिद्धराज ला ४८ साल की उमर बहाल करन को उल्लेख रासमाला काव्य मा भेटसे। सिद्धराज न जगदेव संग आपलो बेटी 'कमोला' को बिह्या कराय देईन, खुश होयकन। वोला २००० गाव की

जागीर देयकन, २००० घोड़ा, हत्ति झुंड ना एक हजार पालकी देईस ना वोको सिहासन आपलो सिंहासन संग लगाईस। भूज को राजा जाडेजा न भी आपली बेटी 'फूलमती' संग जगदेव को बिह्याकर आपलो राजपाट बचायी होतिस असो रासमाला मा लिखी से। कालभैरव सिद्धराज की महारानी ला तंग करत होतो। जगदेवला यव मालुम पड़े पर वोनं कालभैरव ला बंदी बनाईस। या बात जबं महामाया काली ला मालुम पड़ी तबं वोनं कंकाली भाटीन (भिकारीन) को रुप धर पहले सिद्धराज ना मंग जगदेव ला उनकी डोई (सिर) दान मांगिस तब जगदेव न आपली डोई तुरंत भेट कर देई होतिस। या घटनां चैत्र तृतिया इतवार संवत ११५१ (१०९७ ईसवी) की आय। सिद्धराज नं खुश होयकन वोला नगरधन को सुबेदार बनायकन झाडीपट्टी को राज सोपिस।

सिद्धराज न काही समयबाद धारपर आक्रमन करिस। या बातमी नगरधन मा जगदेव ला जबं मालुम भई तबं जगदेव ला खुप गुस्सा आयेव ना वो न कहिस -

धारा भीतर मै बसूं, मै भीतर है धार।
जो मै चलु पिठदे, तो लाजे जात पंवार ('जगदेव की बात')

तुरंत वु सेना संग धार गयो ना सिद्धराज क सेना ला मार भगाईस, नरवर्मन ला गादी सोपकन झाड़ीपट्टी आयेव ना चांदा जिला को गढचांदूर किला मां राजसिंहासन जमायकन झाडीपट्टी को स्वतंत्र राजा मुहुन घोषना करिस। वोकी दुसरी राजधानी नगरधन होती। वोला कर्नाटक क गुलबर्गाजवळ बसवकल्याण (कल्याणी) को राजा चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठम न गोदावरी प्रदेश दान करिस। जगदेव न आंध्रप्रदेश, बस्तर, मैसुर, पाटन, त्रिपुरी (जबलपुर) को राजाहिन ला हरायकन मोठो साम्राज्य उभो करि होतिस, 'रसीक संजीवनी' काव्य मा असो उल्लेख से।

डोंगरगढ अभिलेख (जि.यवतमाळ) मा जगदेव पर एक श्लोक से -
न स देशो न स ग्रामो न स लोगो न स सभा
न तन्नकतं दिवं यत्र जगदेवो न गियते ॥११॥

अर्थात - असो देश नही, ग्राम नही, सभा नही, असी रात नही ना दिवस नही जहां जगदेव की प्रशंसा नही होत रहे।

जगदेवकालीन चांदा की कालीदेवी, नगरधन की कालीदेवी, शिव मंदिर ना भद्रावती को जगनारायण मंदिर (मोठो नागनाथ मंदिर) (आमरो कुलदेवता) अज भी जगदेव की याद देसेत।

जगदेव क मरनबाद झाड़ीपट्टी को राजा वोको मोठो बेटा जगधवल

बनेव। वोको पीढिहिन न यादव राजा सिंघन को सेनापति खोलेस्वरपासुन पराभव वोरी राज करिन असो जिला गजेटिअर मा लिखेव से। जगदेव को नाहान टुरा बीजधवल उत्तरभारत को राजा बनेव होतो ना वोकी राजधानी अखनूर, जम्मू जवर होती। वोको राजतिलक को साल १०९४ ईसवी आय।

रासमालानुसार जगदेव न ५२ साल राज करिस। वोकी ८५ साल उमर मा मृत्यु भई। डॉ.अमरचंद मित्तल अनुसार जगदेव न पहले नगरधन ल १०६०-१०७८ ई. ना गढचांदुर ल ११९४-११३० असो धरी सेस। मधलो अवधि मा वू सेनापति होतो।

जगदेवो जगदाता जगदेवो जगतगुरु ।
जगदेवो जगतदाता, जगदेवो जगप्रिय ॥

(नागर - 'जगदेव पवार')

मोरो परिचय

नाम : डॉ.ज्ञानेश्वर बापुजी टेंभरे
जन्मस्थल : ग्राम मेंढा, त. तिरोड़ा, जि.गोंदिया (म.रा.)
जन्मतिथि : १६ अप्रैल, १९४४
शिक्षा : एम.एस्सी., पीएच.डी.

सेवा क्षेत्र

सेवाकाल : १९७३ से २००४
पद : प्राध्यापक - नागपुर विद्यापीठ, नागपुर
अन्य पद : विभागप्रमुख - प्राणीशास्त्र विभाग
अधिष्ठाता - विज्ञान संकाय
सदस्य - विद्यापीठ व्यवस्थापन परिषद,
विद्वत परिषद तथा विधि सभा
विदेश शिक्षा संशोधन : जर्मनी -१९७६-७८, स्वीजरलैंड - १९८०,
अमेरिका - १९९०, इंडोनेशिया - २००२.
प्रकाशन : ७५ शोधपत्र
०५ जीवविज्ञान पर ग्रंथ
1 Text Book of Insect Morphology Physiology and Endocrinology - 1984
2. Modern Entomology - 1997
3. Techniques in life Sciences - 2008
4. Envertebrate Endocrinology - 2012
5. Molecular Endocrinology - 2017
पीएच.डी.मार्गदर्शन - २१ शोध छात्र

सामाजिक क्षेत्र

प्रबंधक / अध्यक्ष : पवार युवक संगठन, नागपुर (१९८२-१९९६)
अध्यक्ष : अखिल भारतीय पवार क्षत्रिय महासभा, (१९९९-२००६)
संस्थापक-संपादक : पवार संदेश, वार्षिक पत्रिका, (१९८४ से वर्तमान)
: पवार समाजदर्शन, न्यूजलेटर (२०००-२००६)
रचयिता : पवार राजाभोज (२००५)
पवारी ज्ञानदीप (२०११)
गूंज उठे पवारी (२०१७)
सामाजिक लेख : ४० (विभीन्न पत्रिकाओं में)

संपर्क : ४४, विजयनगर, दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपुर-२२
मो : ९०९६०८८४३६

ISBN : 978-93-5097-243-4